



Gyan chand

01 May 1978

01:05 AM

Kasauli

Model: Web-KundliPhal

Order No: 121536001

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 30-01/05/1978
दिन _____: रवि-सोमवार
जन्म समय _____: 01:05:00 घंटे
इष्ट _____: 48:33:06 घटी
स्थान _____: Kasauli
राज्य _____: Himachal Pradesh
देश _____: India

अक्षांश _____: 30:54:00 उत्तर
रेखांश _____: 76:57:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:22:12 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 00:42:48 घंटे
वेलान्तर _____: 00:02:44 घंटे
साम्पातिक काल _____: 15:16:21 घंटे
सूर्योदय _____: 05:39:45 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:59:43 घंटे
दिनमान _____: 13:19:58 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: ग्रीष्म
सूर्य के अंश _____: 16:31:59 मेष
लग्न के अंश _____: 11:15:08 मकर

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: मकर - शनि
राशि-स्वामी _____: मकर - शनि
नक्षत्र-चरण _____: धनिष्ठा - 2
नक्षत्र स्वामी _____: मंगल
योग _____: शुक्ल
करण _____: गर
गण _____: राक्षस
योनि _____: सिंह
नाड़ी _____: मध्य
वर्ण _____: वैश्य
वश्य _____: जलचर
वर्ग _____: मार्जार
युँजा _____: अन्त्य
हंसक _____: भूमि
जन्म नामाक्षर _____: गी-गीत
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: स्वर्ण - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: वृष

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1900	वैशाख	11
पंजाबी	संवत : 2035	वैशाख	19
बंगाली	सन् : 1385	वैशाख	17
तमिल	संवत : 2035	चिथिराई	18
केरल	कोल्लम : 1153	मेदम	18
नेपाली	संवत : 2035	वैशाख	18
चैत्रादि	संवत : 2035	वैशाख	कृष्ण 9
कार्तिकादि	संवत : 2035	चैत्र	कृष्ण 9

पंचांग

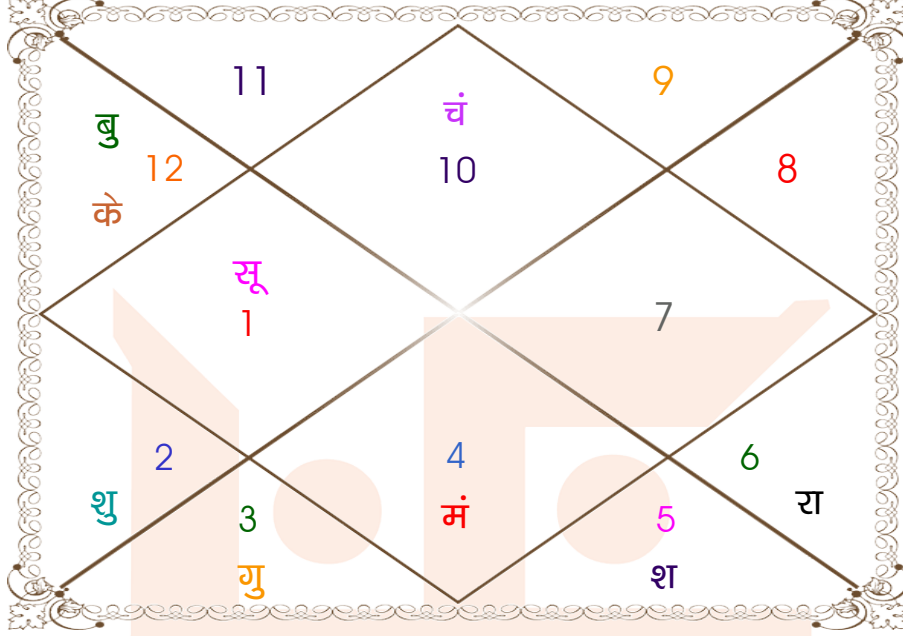
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 8
तिथि समाप्ति काल _____ : 13:34:10
जन्म तिथि _____ : 9
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : श्रवण
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 15:44:48 घंटे
जन्म योग _____ : धनिष्ठा
सूर्योदय कालीन योग _____ : शुभ
योग समाप्ति काल _____ : 11:12:45 घंटे
जन्म योग _____ : शुक्ल
सूर्योदय कालीन करण _____ : कौलव
करण समाप्ति काल _____ : 13:34:10 घंटे
जन्म करण _____ : गर
भयात _____ : 23:20:29
भभोग _____ : 57:50:09
भोग्य दशा काल _____ : मंगल 4 वर्ष 1 मा 28 दि

घात चक्र

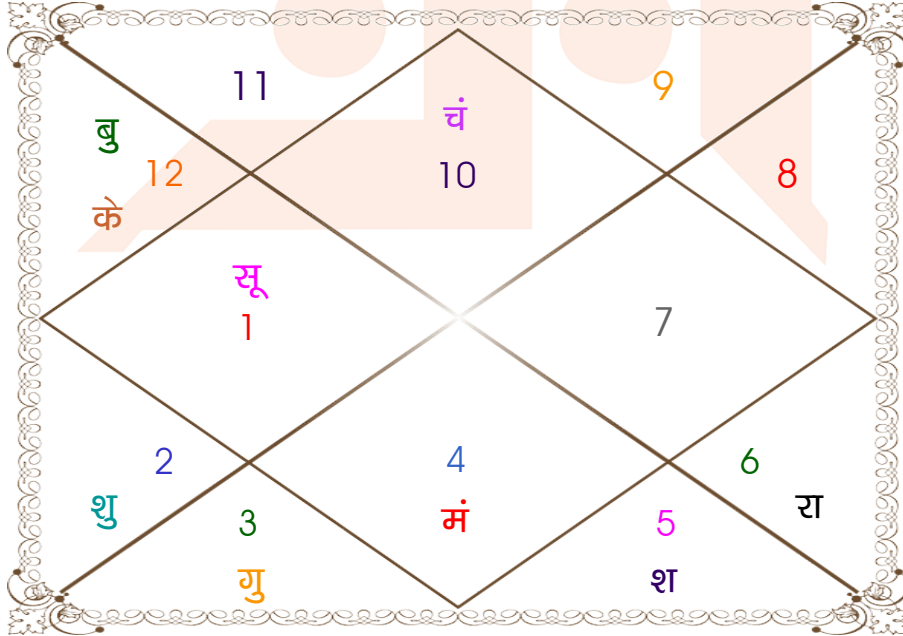
मास _____ : वैशाख
तिथि _____ : 4-9-14
दिन _____ : मंगलवार
नक्षत्र _____ : रोहिणी
योग _____ : वैधृति
करण _____ : शकुनि
प्रहर _____ : 4
वर्ग _____ : मूषक
लग्न _____ : कुम्भ
सूर्य _____ : कुम्भ
चन्द्र _____ : सिंह
मंगल _____ : मीन
बुध _____ : धनु
गुरु _____ : मेष
शुक्र _____ : वृष
शनि _____ : मकर
राहु _____ : मिथुन

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुण्डली

के बु	सू	शु	गु
			मं
चं ल			श
			रा

लग्न कुण्डली

शु	सू	के बु
गु		चं ल
मं		
श		रा

विंशोत्तरी
मंगल 4वर्ष 1मा 28दि
मंगल

01/05/1978

29/06/2095

मंगल	28/06/1982
राहु	28/06/2000
गुरु	28/06/2016
शनि	29/06/2035
बुध	28/06/2052
केतु	29/06/2059
शुक्र	29/06/2079
सूर्य	28/06/2085
चन्द्र	29/06/2095

योगिनी
पिंगला 1वर्ष 2मा 8दि
भद्रिका

09/07/2022

09/07/2027

भद्रिका	19/03/2023
उल्का	18/01/2024
सिद्धा	07/01/2025
संकटा	17/02/2026
मंगला	08/04/2026
पिंगला	19/07/2026
धान्या	18/12/2026
भ्रामरी	09/07/2027

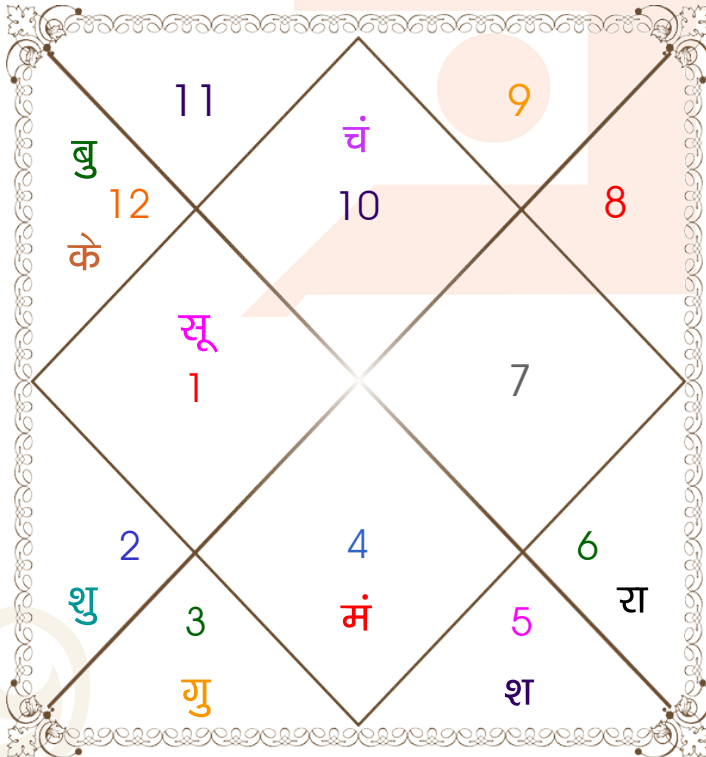
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व अ राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद नं.	रा न	न अं.	स्थिति
लग्न	मक	11:15:08	419:09:18	श्रवण	1	22	शनि चंद्र मंगल	---
सूर्य	मेष	16:31:59	00:58:15	भरणी	1	2	मंगल शुक्र चंद्र	उच्च राशि
चंद्र	मक	28:44:26	13:51:14	धनिष्ठा	2	23	शनि मंगल शनि	सम राशि
मंगल	कर्क	14:21:11	00:26:11	पुष्य	4	8	चंद्र शनि राहु	नीच राशि
बुध	मीन	22:31:49	00:26:02	रेवती	2	27	गुरु बुध चंद्र	नीच राशि
गुरु	मिथु	09:27:42	00:10:34	आर्द्रा	1	6	बुध राहु गुरु	शत्रु राशि
शुक्र	वृष	10:41:45	01:13:04	रोहिणी	1	4	शुक्र चंद्र चंद्र	स्वराशि
शनि	सिंह	00:07:21	00:00:34	मघा	1	10	सूर्य केतु केतु	शत्रु राशि
राहु	कन्या	11:53:21	00:01:07	हस्त	1	13	बुध चंद्र राहु	मूलत्रिकोण
केतु	मीन	11:53:21	00:01:07	उ०भाद्रपद	3	26	गुरु शनि चंद्र	मूलत्रिकोण
हर्ष	व तुला	21:01:20	00:02:32	विशाखा	1	16	शुक्र गुरु गुरु	---
नेप	व वृश्चि	24:20:00	00:01:11	ज्येष्ठा	3	18	मंगल बुध राहु	---
प्लूटो	व कन्या	21:05:15	00:01:29	हस्त	4	13	बुध चंद्र शुक्र	---
दशम भाव	तुला	27:57:45	--	विशाखा	--	16	शुक्र गुरु शुक्र	--

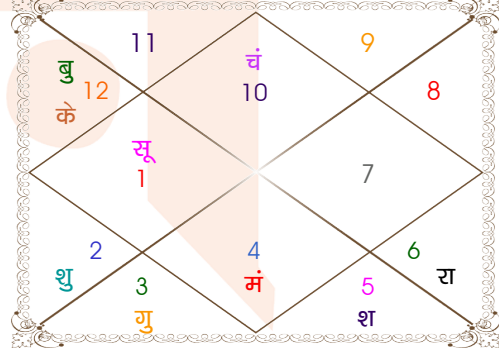
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:33:16

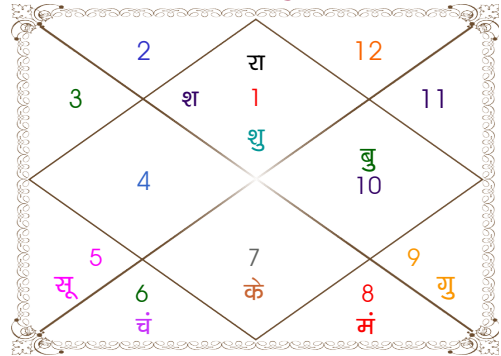
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	धनु 29:02:14	मकर 11:15:08
2	मकर 29:02:14	कुम्भ 16:49:20
3	मीन 04:36:27	मीन 22:23:33
4	मेष 10:10:39	मेष 27:57:45
5	वृष 10:10:39	वृष 22:23:33
6	मिथुन 04:36:27	मिथुन 16:49:20
7	मिथुन 29:02:14	कर्क 11:15:08
8	कर्क 29:02:14	सिंह 16:49:20
9	कन्या 04:36:27	कन्या 22:23:33
10	तुला 10:10:39	तुला 27:57:45
11	वृश्चिक 10:10:39	वृश्चिक 22:23:33
12	धनु 04:36:27	धनु 16:49:20

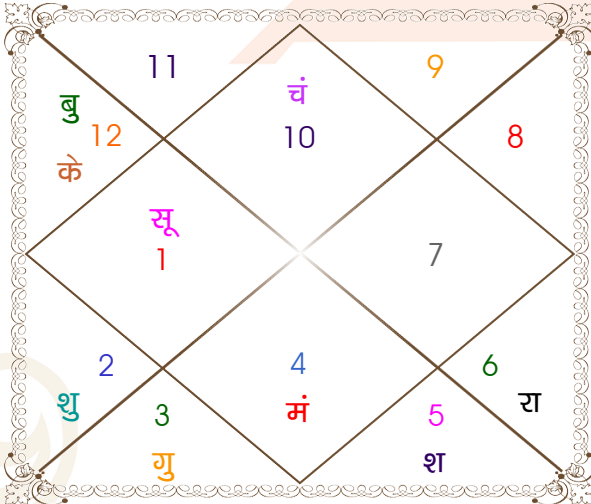
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मकर	11:15:08
2	कुम्भ	22:08:20
3	मीन	29:00:05
4	मेष	27:57:45
5	वृष	21:57:25
6	मिथुन	14:53:33
7	कर्क	11:15:08
8	सिंह	22:08:20
9	कन्या	29:00:05
10	तुला	27:57:45
11	वृश्चिक	21:57:25
12	धनु	14:53:33

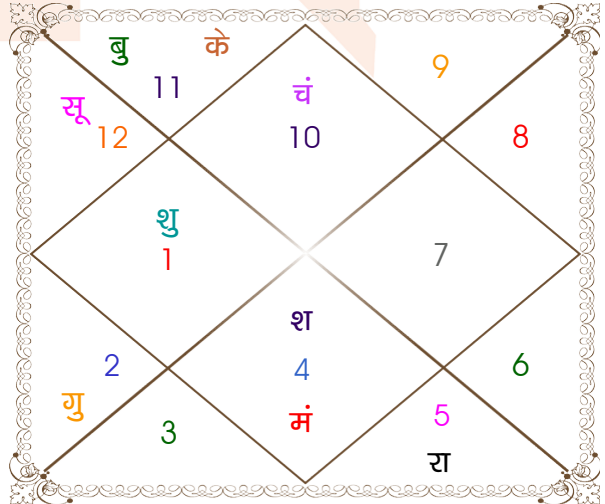
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी
मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त
चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण

चलित कुंडली



भाव कुंडली



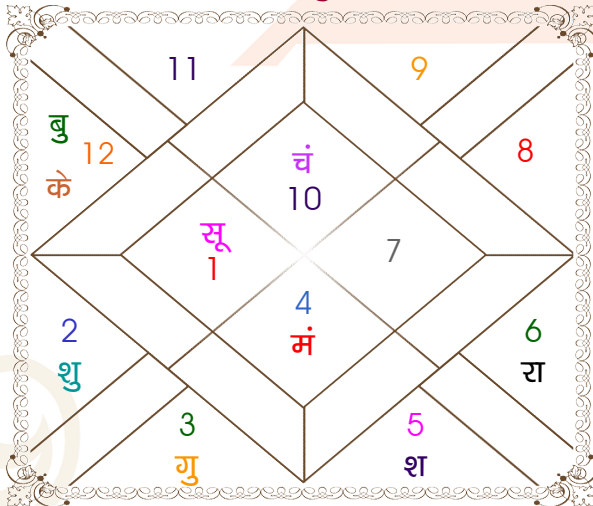
कारक, अवस्था, रश्मि

ग्रह	----- कारक -----		----- अवस्था -----				
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	भातृ	पितृ	युवा	दीप्त	सभा	28.91	74 %
चंद्र	आत्मा	मातृ	बाल	निपीदित	नेत्रपाणि	2.14	30 %
मंगल	मातृ	भातृ	युवा	भीत	भोजन	0.38	67 %
बुध	अमात्य	ज्ञाति	कुमार	भीत	भोजन	0.25	54 %
गुरु	ज्ञाति	धन	कुमार	खल	नेत्रपाणि	6.01	69 %
शुक्र	पुत्र	कलत्र	वृद्ध	स्वस्थ	भोजन	9.09	79 %
शनि	कलत्र	आयु	बाल	खल	सभा	1.11	56 %
राहु	---	ज्ञान	वृद्ध	स्वस्थ	गमन	0.00	59 %
केतु	---	मोक्ष	वृद्ध	स्वस्थ	भोजन	0.00	59 %
कुल						47.89	

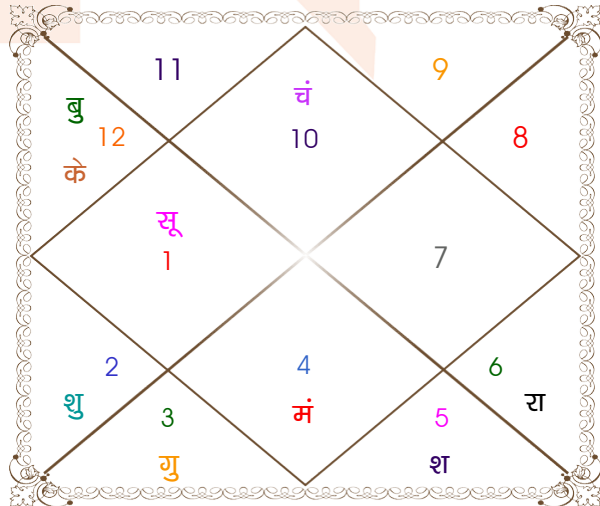
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी
मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त
चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण

चलित कुंडली



लग्न-चलित



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : मंगल 4 वर्ष 1 मास 28 दिन

मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष
01/05/1978	28/06/1982	28/06/2000	28/06/2016	29/06/2035
28/06/1982	28/06/2000	28/06/2016	29/06/2035	28/06/2052
00/00/0000	राहु 11/03/1985	गुरु 16/08/2002	शनि 02/07/2019	बुध 24/11/2037
00/00/0000	गुरु 04/08/1987	शनि 26/02/2005	बुध 11/03/2022	केतु 22/11/2038
01/05/1978	शनि 10/06/1990	बुध 04/06/2007	केतु 20/04/2023	शुक्र 21/09/2041
शनि 28/12/1978	बुध 28/12/1992	केतु 10/05/2008	शुक्र 19/06/2026	सूर्य 29/07/2042
बुध 25/12/1979	केतु 15/01/1994	शुक्र 09/01/2011	सूर्य 01/06/2027	चंद्र 28/12/2043
केतु 22/05/1980	शुक्र 15/01/1997	सूर्य 28/10/2011	चंद्र 31/12/2028	मंगल 25/12/2044
शुक्र 23/07/1981	सूर्य 10/12/1997	चंद्र 26/02/2013	मंगल 08/02/2030	राहु 14/07/2047
सूर्य 27/11/1981	चंद्र 10/06/1999	मंगल 02/02/2014	राहु 15/12/2032	गुरु 19/10/2049
चंद्र 28/06/1982	मंगल 28/06/2000	राहु 28/06/2016	गुरु 29/06/2035	शनि 28/06/2052

केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष
28/06/2052	29/06/2059	29/06/2079	28/06/2085	29/06/2095
29/06/2059	29/06/2079	28/06/2085	29/06/2095	00/00/0000
केतु 24/11/2052	शुक्र 28/10/2062	सूर्य 16/10/2079	चंद्र 29/04/2086	मंगल 25/11/2095
शुक्र 24/01/2054	सूर्य 28/10/2063	चंद्र 16/04/2080	मंगल 28/11/2086	राहु 12/12/2096
सूर्य 01/06/2054	चंद्र 28/06/2065	मंगल 22/08/2080	राहु 28/05/2088	गुरु 18/11/2097
चंद्र 31/12/2054	मंगल 28/08/2066	राहु 16/07/2081	गुरु 27/09/2089	शनि 01/05/2098
मंगल 29/05/2055	राहु 28/08/2069	गुरु 05/05/2082	शनि 29/04/2091	00/00/0000
राहु 16/06/2056	गुरु 28/04/2072	शनि 17/04/2083	बुध 27/09/2092	00/00/0000
गुरु 23/05/2057	शनि 29/06/2075	बुध 21/02/2084	केतु 28/04/2093	00/00/0000
शनि 01/07/2058	बुध 29/04/2078	केतु 28/06/2084	शुक्र 28/12/2094	00/00/0000
बुध 29/06/2059	केतु 29/06/2079	शुक्र 28/06/2085	सूर्य 29/06/2095	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल मंगल 4 वर्ष 2 मा 3 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - शुक्र	शनि - सूर्य	शनि - चंद्र	शनि - मंगल	शनि - राहु
20/04/2023	19/06/2026	01/06/2027	31/12/2028	08/02/2030
19/06/2026	01/06/2027	31/12/2028	08/02/2030	15/12/2032
शुक्र 29/10/2023	सूर्य 07/07/2026	चंद्र 19/07/2027	मंगल 23/01/2029	राहु 15/07/2030
सूर्य 26/12/2023	चंद्र 05/08/2026	मंगल 22/08/2027	राहु 25/03/2029	गुरु 30/11/2030
चंद्र 01/04/2024	मंगल 25/08/2026	राहु 17/11/2027	गुरु 18/05/2029	शनि 14/05/2031
मंगल 07/06/2024	राहु 16/10/2026	गुरु 02/02/2028	शनि 21/07/2029	बुध 09/10/2031
राहु 28/11/2024	गुरु 01/12/2026	शनि 04/05/2028	बुध 16/09/2029	केतु 08/12/2031
गुरु 01/05/2025	शनि 25/01/2027	बुध 25/07/2028	केतु 10/10/2029	शुक्र 30/05/2032
शनि 31/10/2025	बुध 15/03/2027	केतु 27/08/2028	शुक्र 16/12/2029	सूर्य 21/07/2032
बुध 13/04/2026	केतु 04/04/2027	शुक्र 02/12/2028	सूर्य 06/01/2030	चंद्र 16/10/2032
केतु 19/06/2026	शुक्र 01/06/2027	सूर्य 31/12/2028	चंद्र 08/02/2030	मंगल 15/12/2032
शनि - गुरु	बुध - बुध	बुध - केतु	बुध - शुक्र	बुध - सूर्य
15/12/2032	29/06/2035	24/11/2037	22/11/2038	21/09/2041
29/06/2035	24/11/2037	22/11/2038	21/09/2041	29/07/2042
गुरु 18/04/2033	बुध 31/10/2035	केतु 15/12/2037	शुक्र 13/05/2039	सूर्य 07/10/2041
शनि 11/09/2033	केतु 22/12/2035	शुक्र 14/02/2038	सूर्य 04/07/2039	चंद्र 02/11/2041
बुध 20/01/2034	शुक्र 16/05/2036	सूर्य 04/03/2038	चंद्र 28/09/2039	मंगल 20/11/2041
केतु 15/03/2034	सूर्य 29/06/2036	चंद्र 03/04/2038	मंगल 27/11/2039	राहु 05/01/2042
शुक्र 17/08/2034	चंद्र 10/09/2036	मंगल 24/04/2038	राहु 01/05/2040	गुरु 16/02/2042
सूर्य 02/10/2034	मंगल 01/11/2036	राहु 18/06/2038	गुरु 16/09/2040	शनि 06/04/2042
चंद्र 18/12/2034	राहु 13/03/2037	गुरु 05/08/2038	शनि 26/02/2041	बुध 20/05/2042
मंगल 10/02/2035	गुरु 08/07/2037	शनि 01/10/2038	बुध 23/07/2041	केतु 07/06/2042
राहु 29/06/2035	शनि 24/11/2037	बुध 22/11/2038	केतु 21/09/2041	शुक्र 29/07/2042
बुध - चंद्र	बुध - मंगल	बुध - राहु	बुध - गुरु	बुध - शनि
29/07/2042	28/12/2043	25/12/2044	14/07/2047	19/10/2049
28/12/2043	25/12/2044	14/07/2047	19/10/2049	28/06/2052
चंद्र 10/09/2042	मंगल 18/01/2044	राहु 13/05/2045	गुरु 01/11/2047	शनि 23/03/2050
मंगल 10/10/2042	राहु 13/03/2044	गुरु 14/09/2045	शनि 11/03/2048	बुध 10/08/2050
राहु 27/12/2042	गुरु 30/04/2044	शनि 09/02/2046	बुध 07/07/2048	केतु 06/10/2050
गुरु 06/03/2043	शनि 26/06/2044	बुध 21/06/2046	केतु 24/08/2048	शुक्र 19/03/2051
शनि 27/05/2043	बुध 17/08/2044	केतु 14/08/2046	शुक्र 09/01/2049	सूर्य 07/05/2051
बुध 08/08/2043	केतु 07/09/2044	शुक्र 16/01/2047	सूर्य 19/02/2049	चंद्र 28/07/2051
केतु 07/09/2043	शुक्र 06/11/2044	सूर्य 04/03/2047	चंद्र 29/04/2049	मंगल 23/09/2051
शुक्र 02/12/2043	सूर्य 24/11/2044	चंद्र 21/05/2047	मंगल 17/06/2049	राहु 18/02/2052
सूर्य 28/12/2043	चंद्र 25/12/2044	मंगल 14/07/2047	राहु 19/10/2049	गुरु 28/06/2052

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - केतु 28/06/2052 24/11/2052	केतु - शुक्र 24/11/2052 24/01/2054	केतु - सूर्य 24/01/2054 01/06/2054	केतु - चंद्र 01/06/2054 31/12/2054	केतु - मंगल 31/12/2054 29/05/2055
केतु 07/07/2052 शुक्र 31/07/2052 सूर्य 08/08/2052 चंद्र 20/08/2052 मंगल 29/08/2052 राहु 20/09/2052 गुरु 10/10/2052 शनि 03/11/2052 बुध 24/11/2052	शुक्र 03/02/2053 सूर्य 24/02/2053 चंद्र 01/04/2053 मंगल 26/04/2053 राहु 29/06/2053 गुरु 24/08/2053 शनि 31/10/2053 बुध 30/12/2053 केतु 24/01/2054	सूर्य 31/01/2054 चंद्र 10/02/2054 मंगल 18/02/2054 राहु 09/03/2054 गुरु 26/03/2054 शनि 15/04/2054 बुध 03/05/2054 केतु 11/05/2054 शुक्र 01/06/2054	चंद्र 19/06/2054 मंगल 01/07/2054 राहु 02/08/2054 गुरु 31/08/2054 शनि 03/10/2054 बुध 02/11/2054 केतु 15/11/2054 शुक्र 20/12/2054 सूर्य 31/12/2054	मंगल 09/01/2055 राहु 31/01/2055 गुरु 20/02/2055 शनि 16/03/2055 बुध 06/04/2055 केतु 14/04/2055 शुक्र 09/05/2055 सूर्य 17/05/2055 चंद्र 29/05/2055
केतु - राहु 29/05/2055 16/06/2056	केतु - गुरु 16/06/2056 23/05/2057	केतु - शनि 23/05/2057 01/07/2058	केतु - बुध 01/07/2058 29/06/2059	शुक्र - शुक्र 29/06/2059 28/10/2062
राहु 26/07/2055 गुरु 15/09/2055 शनि 15/11/2055 बुध 08/01/2056 केतु 30/01/2056 शुक्र 03/04/2056 सूर्य 22/04/2056 चंद्र 24/05/2056 मंगल 16/06/2056	गुरु 31/07/2056 शनि 23/09/2056 बुध 10/11/2056 केतु 30/11/2056 शुक्र 26/01/2057 सूर्य 12/02/2057 चंद्र 13/03/2057 मंगल 02/04/2057 राहु 23/05/2057	शनि 26/07/2057 बुध 21/09/2057 केतु 15/10/2057 शुक्र 21/12/2057 सूर्य 10/01/2058 चंद्र 13/02/2058 मंगल 09/03/2058 राहु 08/05/2058 गुरु 01/07/2058	बुध 22/08/2058 केतु 12/09/2058 शुक्र 11/11/2058 सूर्य 29/11/2058 चंद्र 30/12/2058 मंगल 20/01/2059 राहु 15/03/2059 गुरु 02/05/2059 शनि 29/06/2059	शुक्र 18/01/2060 सूर्य 18/03/2060 चंद्र 28/06/2060 मंगल 07/09/2060 राहु 09/03/2061 गुरु 18/08/2061 शनि 27/02/2062 बुध 18/08/2062 केतु 28/10/2062
शुक्र - सूर्य 28/10/2062 28/10/2063	शुक्र - चंद्र 28/10/2063 28/06/2065	शुक्र - मंगल 28/06/2065 28/08/2066	शुक्र - राहु 28/08/2066 28/08/2069	शुक्र - गुरु 28/08/2069 28/04/2072
सूर्य 15/11/2062 चंद्र 16/12/2062 मंगल 06/01/2063 राहु 02/03/2063 गुरु 20/04/2063 शनि 16/06/2063 बुध 07/08/2063 केतु 29/08/2063 शुक्र 28/10/2063	चंद्र 18/12/2063 मंगल 23/01/2064 राहु 23/04/2064 गुरु 13/07/2064 शनि 18/10/2064 बुध 12/01/2065 केतु 16/02/2065 शुक्र 29/05/2065 सूर्य 28/06/2065	मंगल 23/07/2065 राहु 25/09/2065 गुरु 21/11/2065 शनि 27/01/2066 बुध 29/03/2066 केतु 22/04/2066 शुक्र 02/07/2066 सूर्य 24/07/2066 चंद्र 28/08/2066	राहु 09/02/2067 गुरु 05/07/2067 शनि 25/12/2067 बुध 28/05/2068 केतु 31/07/2068 शुक्र 30/01/2069 सूर्य 26/03/2069 चंद्र 25/06/2069 मंगल 28/08/2069	गुरु 05/01/2070 शनि 08/06/2070 बुध 24/10/2070 केतु 20/12/2070 शुक्र 31/05/2071 सूर्य 19/07/2071 चंद्र 08/10/2071 मंगल 04/12/2071 राहु 28/04/2072

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

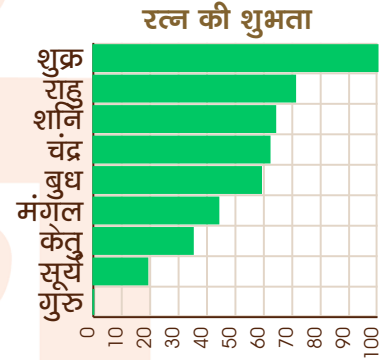
मूलांक	1
भाग्यांक	4
मित्र अंक	1, 4, 8, 9
शत्रु अंक	3, 5, 6
शुभ वर्ष	19,28,37,46,55
शुभ दिन	शुक्र, शनि, बुध
शुभ ग्रह	शुक्र, शनि, बुध
मित्र राशि	कन्या, तुला
मित्र लग्न	मेष, कन्या, वृश्चिक
अनुकूल देवता	नृसिंह
शुभ रत्न	नीलम
शुभ उपरत्न	जमुनिया, बिलौर
भाग्य रत्न	पन्ना
शुभ धातु	लौह
शुभ रंग	काला
शुभ दिशा	पश्चिम
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह
दान अन्न	उड़द
दान द्रव्य	तेल

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
हीरा	शुक्र	100%	सन्तति सुख, व्यावसायिक उन्नति
गोमेद	राहु	71%	भाग्योदय, पराक्रम
नीलम	शनि	64%	दुर्घटना से बचाव, स्वास्थ्य, धन
मोती	चंद्र	62%	स्वास्थ्य, दम्पति
पन्ना	बुध	59%	पराक्रम, शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय
मूंगा	मंगल	44%	दाम्पत्य कष्ट, ग्रह कलेश, हानि
लहसुनिया	केतु	35%	पराक्रम हानि, शत्रु व रोग
माणिक्य	सूर्य	19%	ग्रह कलेश, दुर्घटना
पुखराज	गुरु	0%	शत्रु व रोग, व्यय, पराक्रम हानि



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
मंगल	28/06/1982	31%	69%	59%	44%	0%	100%	64%	58%	47%
राहु	28/06/2000	0%	50%	19%	59%	0%	100%	70%	83%	10%
गुरु	28/06/2016	31%	69%	53%	44%	0%	98%	64%	71%	35%
शनि	29/06/2035	0%	50%	19%	66%	0%	100%	77%	77%	10%
बुध	28/06/2052	31%	50%	44%	72%	0%	100%	64%	71%	35%
केतु	29/06/2059	0%	50%	53%	59%	0%	100%	52%	58%	55%
शुक्र	29/06/2079	0%	50%	44%	66%	0%	100%	70%	77%	47%
सूर्य	28/06/2085	44%	69%	53%	59%	0%	98%	52%	58%	10%
चंद्र	29/06/2095	31%	75%	44%	66%	0%	100%	64%	58%	10%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत् ॥

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते हैं। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते हैं। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ हैं तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते हैं अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते हैं।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते हैं। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुंडली और रत्न

आपके लिए हीरा रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है।

हीरा आपका कारक रत्न है। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

इसे धारण करने से आपके जीवन में विशेष ऊर्जा का प्रवाह होगा। आपकी प्रतिभा बढ़ेगी। इस रत्न को धारण करने से आपके रुके हुए कार्य बन सकते हैं। स्वास्थ्य व सुख सम्पत्ति का लाभ मिल सकता है। आपको कार्य करने पर जो श्रेय नहीं मिल पाता है वह प्राप्त होने लगेगा। इस रत्न को धारण करने से आपको कुछ ही समय में सुख की अनुभूति होगी। अतः यह रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के जीवन पर्यन्त धारण करें तो लाभ होगा।

आपके लिए गोमेद, नीलम, मोती एवं पन्ना रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

मूंगा व लहसुनिया रत्न आपके लिए नेष्ट हैं। अतः इन्हें न पहनना ही बेहतर है। यदि आप इन रत्नों को धारण करते हैं तो इनकी अनुकूलता का परिक्षण अवश्य कर लें। अनुकूलता होने पर ही इन्हें धारण करें, अन्यथा शीघ्र अति शीघ्र उतार दें। इन रत्नों के धारण करने से आपको मानसिक परेशानी, स्वास्थ्य में कमी या धन हानि हो सकती है।

माणिक्य व पुखराज रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र पंचम भाव में स्थित है। शुक्र रत्न हीरा आपके लिए शुभ फलदायी रहेगा। आपको शुक्र रत्न हीरा धारण करना चाहिए। हीरा रत्न आपको कविताओं, ललितकलाओं और लेखन में गहरी रुचि देगा। संगत, कला और सौंदर्य सम्पन्न और सद्गुणी बनाएगा। आप आस्तिक और उदार व्यक्ति बनेंगे। हीरे रत्न प्रभाव से आप विद्वान, प्रतिभाशाली और अच्छे वक्ता सिद्ध होंगे। इस रत्न की शुभता से आप राजनीतिज्ञ मंत्री या न्यायाधीश भी हो सकते हैं। साथ ही यह रत्न वाहनों का सुख, उत्तम व विश्वसनीय मित्र देगा। संतान सुख के पक्ष से भी यह रत्न शुभदायक रहेगा।

आपकी मकर लग्न की कुंडली में शुक्र पंचमेश एवं दशमेश है। आप शुक्र रत्न हीरा धारण कर सकते हैं। हीरा रत्न आपको माता-पिता से सुख, शारीरिक सौंदर्य की वृद्धि, भू-संपत्ति का सुख दिला सकता है। इस रत्न को धारण कर आप वाहन, राज्य व आजीविका क्षेत्र से शुभ फल प्राप्त हो सकते हैं। लाभ व प्रतिष्ठा प्राप्ति के लिए भी आप यह हीरा रत्न धारण कर सकते हैं। यह रत्न पंचमेश का होने के कारण आपको विद्या, बुद्धि एवं संतान सुख को अनुकूल करने में सहयोग कर सकता है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूठी में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ॐ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा रत्नी से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु नवम भाव में स्थित है। राहु ग्रह की शुभता बढ़ाने के लिए आप गोमेद रत्न धारण करें। गोमेद रत्न शुभता से आप परिश्रमी और ईश्वर पर श्रद्धावान बनेंगे। रत्न शुभता से आप सभ्य और सहृदय व्यक्ति बनेंगे। यह रत्न आपको सुधारवादी विचार वाले, उन्नति आत्मशक्ति वाले और जगत के कल्याण के लिए प्रयत्नशील व्यक्ति बना सकता है। यात्राओं को सुखद बनाने के लिए भी आप गोमेद रत्न धारण कर सकते हैं। विद्वान और पूज्यनीय व्यक्तियों के संपर्क में आने के अवसर यह रत्न आपको दे सकता है।

राहु कन्या राशि में स्थित है व इसका स्वामी बुध तीसरे भाव में स्थित है। अतः गोमेद धारण करने से आप बुद्धि और पराक्रम दोनों का प्रयोग कर सफलता पाने का प्रयास

करेंगे। यह रत्न आपको परम प्रतापी और अत्यन्त प्रभावशाली बनाएगा। आपको सब प्रकार के सुखों से युक्त करेगा। इस रत्न को धारण करने पर आपको भाई बहनों का सुख प्राप्त होगा। यह रत्न आपके भाग्योदय में सहायक बन आपको अत्यधिक धन प्राप्त करने के अवसर दे सकता है। रत्न शुभता आपके अरिष्टों का नाश करेगी। एवं यह रत्न आपको दृढ़-विवेकी, योगाभ्यासी बनाएगा और आप विद्वान और तीव्र स्मरण शक्ति के स्वामी होंगे।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान कराये। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूठी में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ॐ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि अष्टम भाव में स्थित है। शनि ग्रह की सभी शुभता प्राप्त करने के लिए आपको शनि रत्न नीलम धारण करना चाहिए। नीलम आपको विद्वान वाकपटु और दयालु बनायेगा। नीलम शुभता से आप निर्भय चतुर और उदार प्रकृति के व्यक्ति बनेंगे। विवाह के माध्यम से आपको आर्थिक लाभ की प्राप्ति हो सकती है। रत्न शुभता से आपको उत्तराधिकार में जमीन की प्राप्ति हो सकती है। इसके अलावा नीलम रत्न की शुभता आपको गूढशास्त्रों का ज्ञान प्राप्त करने में सहयोगी सिद्ध होगी।

आपकी मकर लग्न की कुंडली में शनि लग्नेश एवं द्वितीयेश है। शनि रत्न नीलम धारण कर आप शनि के सभी शुभफल प्राप्त कर सकते हैं। यह नीलम रत्न आपको स्वभाव, शरीर आरोग्यता, आयु, यश एवं प्रतिष्ठा दे सकता है। इस रत्न को धारण करने से आपके संचित धन में वृद्धि हो सकती है। रत्न शुभता से स्वास्थ्य शुभ, व्यक्तित्व उज्ज्वल, अचल संपत्ति, कुटुंब, उत्तम भोजन, पारिवारिक सुख, वाणी की मधुरता एवं आरम्भिक शिक्षा उत्तम हो सकती है। नीलम रत्न प्रभाव से आपके परिवार में बढ़ोतरी हो सकती है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ॐ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्रमा प्रथम भाव में स्थित है। इसलिए आपको चंद्र रत्न मोती धारण करना चाहिए। चंद्र रत्न मोती धारण करने से आपके अपनी माता से संबंध मजबूत होंगे। मोती रत्न आपको मानसिक शांति देगा। इसके अलावा मोती रत्न आपको व्यवसायिक विवेकशीलता देकर आपके धन प्रवाह को अनुकूल बनाये रखेगा। सप्तम भाव में स्थित तुला राशि पर चन्द्र की दृष्टि होने के कारण आपका जीवनसाथी गुणवान, कला प्रेमी और कलाप्रेमी होगा। साथ ही यह मोती रत्न आपके वैवाहिक जीवन को सुखमय बनाये रखने में सहयोग करेगा।

आपकी मकर लग्न की कुंडली में चंद्र सप्तम भाव के स्वामी है। चंद्र रत्न मोती धारण करना आपके लिए विशेष शुभ रहेगा। मोती रत्न धारण करने से आपका अपने जीवन साथी से विशेष स्नेह बना रहेगा। मोती की शुभता से दांपत्य जीवन स्नेह और सौहार्द भाव से परिपूर्ण हो सकता है। यह रत्न आपके स्वाभिमान भाव में बढ़ोतरी कर सकता है। मोती रत्न से आपको क्रय-विक्रय से संबन्धित क्षेत्रों में उत्तम लाभ देकर मनोकूल सफलता दे सकता है। रत्न शुभता से आप ग्रहस्थ जीवन में स्थिरता आयेगी। यह रत्न आपको विनोदी स्वभाव देकर आपको विपरीत परिस्थितियों का मुस्करा कर मुकाबला करने की शक्ति दे सकता है। ससुराल से लाभ, सम्मानित, व्यवसाय में लाभ व मानसिक शांति प्राप्ति के लिए भी मोती रत्न धारण किया जा सकता है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूली में, सोमवार को प्रातः काल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ॐ सौँ सौमाय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरान्त चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्नी से १० रत्नी का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते हैं।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध तीसरे भाव में स्थित है। आपको बुध रत्न पना धारण करना चाहिए। पन्ना रत्न आपको व्यापारी सफलता देगा। व्यापारी वर्ग से मित्रवत संबंध स्थापित

करेगा। व्यापारादि कार्यों रुचि आती है। आपको भाई-बंधुओं से लाभ प्राप्ति के संयोग बनेंगे। रत्न प्रभाव से शौर्य, पराक्रम और वीरता के स्थान पर बुद्धि बल का प्रयोग अधिक करेंगे। लेखन और कला के पक्ष से भी पन्ना रत्न अनुकूल फल देगा। यह रत्न आपको विचार एवं भाव अभिव्यक्ति की योग्यता देगा। स्मरणशक्ति बढ़ाने के लिये आप यह रत्न धारण कर सकते हैं।

आपकी मकर लग्न की कुंडली में बुध नवमेश व षष्ठेश है। बुध रत्न पन्ना आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण कर आप अपने भाग्य को प्रगतिशील बना सकते हैं। धर्म, कर्म और आध्यात्मिक विषयों से सहज जुड़ सकते हैं। पन्ना रत्न धारण से आप शत्रुओं को बुद्धिमान्नी से परास्त कर पायेंगे। यह रत्न आपको यथायोग्य सम्मान दिलाएगा। रत्न शुभता से आपके बाधित कार्य फिर से बनने लगेंगे। पन्ना रत्न की शुभता से आप अपने ऋणों का समय पर भुगतान करने में सफल रहेंगे। दैनिक व्यवसाय की कठिनाईयां रत्न शुभता से दूर हो सकती है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत्त होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ॐ बुं बुधाय नमः का 9 माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्नी का कम से कम, अन्यथा 6 रत्नी का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखरी रुद्राक्ष धारण कर सकते हैं।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल सप्तम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर आपके जीवन साथी के क्रोध भाव में वृद्धि हो सकती है। आपका वैवाहिक जीवन दुःखमयी हो सकता है। इस रत्न को धारण करने पर आपका विवाह देरी से हो सकता है। जीवनसाथी के साथ व्यवहार में सरसता की कमी अलगाव तक लेकर जा सकती है। रत्न प्रभाव आपको बेचैनी और चिडचिडापन देने के साथ-साथ तर्क और बहस करने वाला भी बना सकता है। सफलता के लिए आपको कड़ी मेहनत करनी पड़ सकती है। रत्न धारण से वात रोग, पेट से संबंधित तकलीफें बढ़ सकती है। तथा मुकद्दमों में धन हानि के योग बन सकते हैं।

आपकी मकर लग्न की कुंडली में मंगल चतुर्थेश एवं एकादशेश है। मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर भूमि-भवन के विषय सहजता से पूर्ण नहीं होंगे। मूंगा रत्न आपको संपत्ति के क्रय-विक्रय से संबंधित कार्यक्षेत्रों में हानि दे सकता है। इस रत्न के प्रभाव से आपको जन्मस्थान से दूर रहना पड़ सकता है। यह रत्न आपकी माता, वाहन एवं समाज का सुख मार्ग बाधित कर सकता है। इस रत्न को धारण करने के बाद आप अधिक से अधिक लाभ प्राप्त करने

क लिए प्रेरित हो सकते है। उच्चाभिलाषा की कामना आपको आंशिक रूप से स्वाथी भी बना सकती है। मूंगा रत्न आपको जोश, साहस और जोखिम पूर्ण क्षेत्रों में आय व लाभार्जन की प्रवृति आपको दे सकता है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु तीसरे भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः केतु रत्न लहसुनिया धारण करने पर आपकी धैर्यशक्ति और दानशीलता प्रभावित हो सकती है। यह रत्न आपके बल, धन एवं यश में कमी करेगा। खान-पान का पूर्ण सुख आपको नहीं मिल पाएगा। शत्रु आपको समय समय पर परेशान कर सकते है। शत्रु भय के कारण आपके जीवन की अनेक गतिविधियां बाधित हो सकती है। व्यर्थ की चिंताओं का आगमन आपके जीवन में हो सकता है। गोमेद रत्न के प्रभाव से आपको अनजान भय का सामना करना पड़ सकता है। भ्रम और चिंता से व्याकुलता का अनुभव आपको होगा।

केतु मीन राशि में स्थित है व इसका स्वामी गुरु छठे भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न आपको विशेष समय पर बौद्धिक योग्यता का सहयोग प्राप्त नहीं होने देगा। बुद्धि बल की कमी आपको शत्रु पक्ष से पराजय दे सकती है। रत्न प्रभाव से आप रोग, ऋण और शत्रुओं से पीड़ित होंगे। इसके कारण विशेष कार्य करने के अवसर अन्य किसी को प्राप्त हो सकते हैं। बड़े कार्यों में योग्यता दिखाने के अवसर आपको नहीं मिल पाएंगे। आपको कठिन से कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ सकता है। यह रत्न आपके रोगों में वृद्धि करेगा। कोर्ट कचहरी के मामलों में धन हानि होगी। इस रत्न को पहनने पर आपको विभिन्न षड्यंत्रों से निपटना पड़ेगा।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य चतुर्थ भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः सूर्य रत्न माणिक्य आपको आर्थिक रूप से कमजोर कर आपके आजीविका क्षेत्र में दिक्कतें दे सकता है। रत्न प्रभाव से आपके भाईयों की उन्नति बाधित हो सकती है। इस रत्न से घर सुख की कमी का अनुभव आपको जीवन भर हो सकता है। घर-परिवार से दूरी के योग बन सकते है। सूर्य रत्न माणिक्य आपकी चिंताओं को बढ़ाएगा। यह रत्न माता-पिता की सेवा से आपको वंचित कर सकता है। साथ ही माणिक्य रत्न प्रभाव से आपका माता-पिता से मनमुटाव भी हो सकता है। सोने, चांदी का व्यापार करना आपके लिए हानिकारक सिद्ध हो सकता है। तथा आपको आंखों से संबंधित परेशानियां हो सकती हैं।

आपकी मकर लग्न की कुंडली में सूर्य अष्टमेश है। अष्टमेश सूर्य का माणिक्य रत्न धारण करना आपके लिए प्रतिकूल सिद्ध हो सकता है। माणिक्य रत्न धारण करने पर आपके स्वास्थ्य सुख में कमी हो सकती है। इस रत्न में शुभता की कमी के कारण आप पदोन्नति के लिए विशेष चातुर्य का प्रयोग करने का प्रयास कर सकते है। सरकारी क्षेत्रों से अपना काम निकलवाने के लिए भी आप अन्य स्रोतों का सहयोग लेने से पीछे नहीं हटेंगे। रत्न प्रभाव से आप अपनी अधिकारिक शक्तियों का आंशिक दुरुपयोग कर सकते है। रत्न की अनुकूलता

आपके साथ नहीं है। इसलिए यह रत्न आपके पिता के स्वास्थ्य में कमी का कारण बन सकता है। यह रत्न आपको दीर्घकालीन रोग दे सकता है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु षष्ठ भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः गुरु रत्न पुखराज धारण करने पर आप के रोगों, ऋण और शत्रुओं में वृद्धि हो सकती है। पुखराज रत्न आपकी शारीरिक प्रकृति को पीड़ित कर सकता है। विवेक, पराक्रम और उदारता भाव के लिए भी रत्न का सहयोग आपको प्राप्त नहीं हो पाएगा। पुखराज रत्न धारण करना आपके मामा और भाईयों के सुखों में कमी कर सकता है। रत्न प्रभाव से आपके काम समय पर पूरे नहीं हो पायेंगे। सेवकों के कारण कार्य विलंबित हो सकते हैं। न्याय प्रणाली पर आपकी आस्था कमजोर हो सकती है। आजीविका क्षेत्र में वरिष्ठजन आपको परेशानियां दे सकते हैं।

आपकी मकर लग्न के कुंडली में गुरु तृतीयेश एवं द्वादशेश है। गुरु का रत्न पुखराज धारण करना आपके लिए अनुकूल नहीं रहेगा। पुखराज रत्न पहनने पर अनिद्रा रोग प्रभावी होकर आपके स्वास्थ्य में कमी कर सकते हैं। कार्यों को पूर्ण करने के लिए आपको अधिक प्रयास करने पड़ सकते हैं। जिसके कारण आपको आराम के अवसर कम मिलेंगे। यह भी आपको अस्वस्थ करेगा। इस रत्न के प्रभाव से आप चिंता और अपमान से पीड़ित हो सकते हैं। मोक्ष प्राप्ति के मार्ग को यह रत्न बाधित कर सकता है। पुखराज रत्न आपके विदेश भाव को प्रबल कर आपको व्यर्थ की यात्राएं दे सकता है। इसके अतिरिक्त इस रत्न को धारण करने पर आपको आर्थिक दंड के रूप में टैक्स (कर) देने पड़ सकते हैं।

दशानुसार रत्न विचार

शनि

(28/06/2016 - 29/06/2035)

शनि की दशा में आपका हीरा, नीलम व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा, लहसुनिया, माणिक्य व पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध

(29/06/2035 - 28/06/2052)

बुध की दशा में आपका हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना, गोमेद, नीलम व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा, लहसुनिया व माणिक्य रत्न नेष्ट हैं और पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु
(28/06/2052 - 29/06/2059)

केतु की दशा में आपका हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना, गोमेद, लहसुनिया, मूंगा, नीलम व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य व पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुक्र
(29/06/2059 - 29/06/2079)

शुक्र की दशा में आपका हीरा व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, पन्ना व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया व मूंगा रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य व पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य
(29/06/2079 - 28/06/2085)

सूर्य की दशा में आपका हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती, पन्ना, गोमेद, मूंगा व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य रत्न नेष्ट हैं और लहसुनिया व पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित

रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

चन्द्र
(28/06/2085 - 29/06/2095)

चन्द्र की दशा में आपका हीरा व मोती रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना, नीलम व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा व माणिक्य रत्न नेष्ट हैं और लहसुनिया व पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।



शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - लापीज

आपका जन्म मकर राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी शनि होता है। शनि सबसे अधिक महत्वपूर्ण ग्रह है क्योंकि यह ज्योतिष शास्त्र में न्याय का प्रतीक व न्यायप्रिय माना जाता है तथा शनि को ज्योतिष में आध्यात्मिक ज्ञान के लिये शुभ माना जाता है। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः मकर राशि के लग्न वाले जातकों को मकर राशि के स्वामी ग्रह शनि को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। शनि ग्रह के लिये लापीज रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात् जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी शनि न्यायप्रिय एवं नौकरी का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को समाज में सम्मान तथा नौकरी पेशा लोगों के लिये अपने वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग व सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को घर के बुजुर्गों तथा सेवकों का सहयोग भी प्राप्त होता है। शनि ग्रह एकाग्रता तथा आत्मिक शक्ति का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको जोड़ों से संबंधित रोग हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा जिसको कोर्ट कचहरी मुकदमे आदि से संबंधित परेशानी हों उनको यह रत्न अल्प प्रयास से समस्याओं से मुक्ति दिलवाता है।

लापीज रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि मध्यमा अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में शनि की अंगुली मानी जाती है। लापीज रत्न शनि का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात् शनिवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय सांयकाल सूर्यास्त के पश्चात होता है। शनिवार के दिन सूर्यास्त से एक घंटे के समय के अंदर इसको धारण करना होता है। लापीज को यदि शनिवार के साथ-साथ शनि के नक्षत्र अर्थात् पुष्य, अनुराधा और उ. भाद्रपद में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

लापीज को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पट्टे पर काले रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, शनि के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए।

शनि का मंत्र - ॐ शं शनैश्चराय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि शनि से संबंधित पदार्थ जैसे काली उड़द, सरसों का तेल, सवा मीटर काले कपड़े का दान करें तो लापीज रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन शनि का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें और शनि देव की उपासना करें तो यह लापीज रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक शनिवार को शनिदेव जी की उपासना करें तथा शनिदेव जी का सरसों के तेल से अभिषेक करें तो यह और अधिक शुभकारी हो जाता है।

मकर लग्न वाले जातक यदि लापीज रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।



रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ेतरा कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली मकर लग्न की है। आपके व्यक्तित्व पर शनि का प्रभाव दिखाई पड़ता है। आप मेहनती हैं, इसलिए बिना रुके निरन्तर कार्य करते रहते हैं, जिस कारण इनके किये हुए कार्यों में गलतियों की संभावना कम रहती है। आप दृढ़ निश्चयी और संयमी हैं। जीवन से आने वाली बाधाओं से घबराते नहीं हैं, बल्कि उनका डटकर मुकाबला करते हैं। दूसरों की मदद करने की प्रवृत्ति रखते हैं। साथ ही आप हंसमुख हैं। आप में व्यय अधिक करने का स्वभाव हो सकता है। दूसरों की मदद करने वाले होते हैं। आप हंसमुख हैं। आप कम समय में किसी भी परिस्थिति में अपने का ढालने में दक्ष होते हैं।

आप गलत बातें सहन नहीं कर पाते चाहे उस विरोध में अकेले ही रह जाये। आप

अपनी समझदारी और सूझ-बूझ का परिचय देते हुए बड़ी ही आसानी से अपना कार्य करवा लेते हैं। हर विषय में आपकी रुचि रहती है और हर क्षेत्र में सफलता पाना चाहे हैं और अपनी मेहनत और लगन से सफलता हासिल कर भी लेते हैं। आप न्याय है और कभी किसी के साथ धोखा नहीं करते। असफलता मिलने पर आप शीघ्र निराश हो जाते हैं। व्यर्थ की बातें करने में अपना वक्त व्यय नहीं करते और अपने भविष्यके बारे में सोचते हैं। आप परोपकारी है और अनुशासन पसंद हैं। अपने सिद्धांतों पर जीते हैं। आप परोपकारी हैं।

कुंडली के सभी 12 भाव सदैव शुभ फल नहीं देते। 12 भावों में से 6, 8 व 12 वां भाव जिन्हें त्रिक भाव के नाम से भी जाना जाता है। इन भावों के भावेश तथा इन भावों में स्थित ग्रह अशुभ होने के कारण अशुभ फल देते हैं। त्रिक भावों के स्वामी व इनमें बैठे ग्रह किसी न किसी प्रकार आपके जीवन में बाधा डालते है। कुंडली के षष्ठ भाव को रोग, ऋण और शत्रु भाव की संज्ञा की जाती हैं। छोटी अवधि के रोग भी इसी भाव से देखे जाते हैं। तथा अष्टम भाव मृत्यु, दुर्घटना, कलेश, विघ्न और अकाल मृत्यु और परेशानियों का विचार किया जाता है। अष्टमेश का किसी भी भाव-भावेश से सम्बन्ध बनना अनुकूल नहीं माना जाता है। 6 व 8 भावों के बाद एक अन्य व अंतिम त्रिक भाव 12 वां भाव है। 12 वें भाव से व्यय, सरकारी दंड, लम्बी अवधि का कारावास, शयन, मोक्ष, टैक्स तथा विदेश स्थान का विचार किया जाता है।

6, 8, 12 भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता है। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं। व 6, 8, 12 भाव के स्वामी तथा इन भावों में स्थित ग्रह अपनी महादशा-अन्तर्दशा में अनिष्ट तथा अशुभ फल देते है।

बुध आपके षष्ठेश व नवमेश है, आपका पारिवारिक जीवन कष्टकारी हो सकता है। व्यापारिक विषयों में भी हानि के योग बन सकते हैं। इसके अलावा यह आपको शत्रुओं के द्वारा धन-हानि की संभावनाएं दे सकता है। यह योग पिता के स्वास्थ्य के पक्ष से भी शुभ नहीं है। सूर्य अष्टमेश गुरु द्वादशेश तथा तृतीयेश हैं।

गुरु आपके छठे भाव में है, गुरु की यह स्थिति आपको शत्रुओं की अधिकता, शत्रुविजयी, धन संचयी, पदवृद्धि, बुद्धिमान, विचारवान, भाग्यवान और आध्यात्मिक भाव प्रदान कर रहा है।

शनि के अष्टम भाव में होने से आप दीर्घ अवधि के लिए रोगी हो सकते है, यह योग मानसिक सुखों में भी कमी कर रहा है। धन में कमी, व्यवसाय में हानि, पैतृक संपत्ति प्राप्ति में बाधक, संतान कष्ट दे सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 1, 4, 5, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के

लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।



साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	01/05/1978-04/11/1979 15/03/1980-27/07/1980	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	17/12/1987-21/03/1990 20/06/1990-15/12/1990	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	21/03/1990-20/06/1990 15/12/1990-05/03/1993 15/10/1993-10/11/1993	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	05/03/1993-15/10/1993 10/11/1993-02/06/1995 10/08/1995-16/02/1996	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	17/04/1998-07/06/2000	-----

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	01/11/2006-10/01/2007 16/07/2007-10/09/2009	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	26/01/2017-21/06/2017 26/10/2017-24/01/2020	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	24/01/2020-29/04/2022 12/07/2022-17/01/2023	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	29/04/2022-12/07/2022 17/01/2023-29/03/2025	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	03/06/2027-20/10/2027 23/02/2028-08/08/2029 05/10/2029-17/04/2030	-----

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	27/08/2036-22/10/2038 05/04/2039-13/07/2039	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	08/12/2046-06/03/2049 10/07/2049-04/12/2049	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	06/03/2049-10/07/2049 04/12/2049-25/02/2052	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	25/02/2052-14/05/2054 02/09/2054-05/02/2055	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	07/04/2057-27/05/2059	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया

फल

अशुभ
अशुभ
शुभ
शुभ
अशुभ

क्षेत्र

दुर्घटना
कम खर्च
स्वास्थ्य
धन
सुख हानि

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपके जन्म काल में मंगल की स्थिति सप्तम भाव में है अतः आप मांगलिक दोष से युक्त पुरुष हैं। परन्तु शास्त्रानुसार आपके मंगल का दोष भंग हो जाता है अतः ऐसे मंगल से आप अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल ही प्राप्त करेंगे। इससे आपका तथा आपकी पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु पत्नी के स्वभाव में उग्रता का भाव विद्यमान हो सकता है। इसके शुभ प्रभाव से आप जीवन में समस्त प्रकार से सुखैश्वर्य एवं धन धान्य को अर्जित करेंगे तथा सुखपूर्वक जीवन में इनका उपभोग करेंगे।

इस मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में विलम्ब तो होगा परन्तु विवाह करने में किसी भी प्रकार से अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का आपको सामना नहीं करना पड़ेगा तथा आनन्दपूर्वक सुखद वातावरण में आपका पाणिग्रहण संस्कार सम्पन्न होगा। आप दोनों का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा फलतः विवाह के पश्चात् दाम्पत्य जीवन सुख एवं शान्ति से व्यतीत होगा। पत्नी के स्वभाव में उग्रता होने के कारण यदा कदा आपसी संबंधों में अल्प मात्रा में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु यह सब थोड़े समय के लिए रहेगा तथा परस्पर संबंध पूर्ववत् घनिष्ठ एवं मधुर रहेंगे।

आपकी कुंडली में सप्तम भाव में स्थित मंगल आपको योग्य जीवन साथी प्रदान करने में सहयोग प्रदान करेगा तथा आपके परस्पर संबंध अत्यन्त ही मधुर एवं घनिष्ठ रहेंगे। आपका दाम्पत्य जीवन सुख एवं शान्ति पूर्वक व्यतीत होगा। इस मंगल की दशम भाव पर दृष्टि होने से आप एक मान सम्मान युक्त प्रतिष्ठित पुरुष होंगे तथा समाज में पूर्ण रूप से यशार्जन करने में भी सफल रहेंगे। साथ ही कार्यक्षेत्र में भी आप नित्य उन्नति करते रहेंगे। लग्न पर दृष्टि होने से आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा क्रोध के भाव की अधिकता भी दृष्टिगोचर होगी। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि होने से आपका परिवारिक जीवन सामान्य तथा सुख एवं

शान्ति पूर्वक व्यतीत होगा परन्तु यदा कदा अशान्ति या कलह का वातावरण भी अल्प काल के लिए उत्पन्न हो सकता है। विद्या प्राप्ति के क्षेत्र में भी आप हमेशा सफलता अर्जित करेंगे। इस प्रकार आपका जीवन पूर्ण सन्तोष एवं शान्ति पूर्वक व्यतीत होगा।

अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक शुभ एवं सुखमय बनाने के लिए आपको किसी गैरमांगलिक या ऐसी मंगली कन्या से विवाह करना चाहिए जिसका मांगलिक दोष उचित रूप से भंग हो रहा हो। ऐसा उचित मिलान होने पर आप जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति तथा सफलता अर्जित करेंगे एवं एक भाग्यशाली पुरुष होकर धन धान्य एवं ऐश्वर्य से सुसम्पन्न रहेंगे। जीवन में आपको किसी भी आवश्यक एवं महत्वपूर्ण वस्तु का अभाव नहीं रहेगा तथा सभी सुखों का प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करने में आप सफल रहेंगे।

इसके अतिरिक्त जिस कन्या के सप्तम भाव में ही मंगल विद्यमान हो उस कन्या से विवाह की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए क्योंकि समान भाव में स्थित मंगल जीवन साथी के लिए अच्छा नहीं रहेगा जिस का उसके स्वास्थ्य पर प्रभाव होगा इससे आप दाम्पत्य जीवन का पूर्ण सुखोपभोग करने में परेशानी की अनुभूति करेंगे। साथ ही इससे दाम्पत्य जीवन में अनावश्यक समस्याएं भी उत्पन्न होंगी। इसके अलावा अन्य भावों में स्थित मंगल सभी कुप्रभावों को दूर करेगा। दाम्पत्य जीवन को सुखी तथा शान्ति पूर्वक व्यतीत करने में सहायक सिद्ध होगा। अतः सोच विचार कर ही अन्तिम रूप से निर्णय लेना चाहिए।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में शंखचूड़ नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक के भाग्योदय होने में थोड़ा बहुत व्यवधान उपस्थित हो जाता है और नौकरी व्यवसाय में भी आंशिक रुकावटें आती हैं परन्तु कालान्तर में व्यवधान हट जाता है। परन्तु नौकरी होने पर अवनति का भय बना रहता है। जातक को आगे बढ़ने में व्यवधान तो आता है पर थोड़ा संघर्ष करने पर वह व्यवधान समाप्त हो जाता है। व्यापार व्यवसाय में थोड़ा बहुत व्यवधान आकर नुकसान को प्राप्त करता है। मित्रों द्वारा छल कपट व्यवहार होने के कारण जातक को क्षति उठानी पड़ती है। पिता के सुख में न्यूनता रहती है। मामा पक्ष से या बहनोई से छल कपट किये जाने पर थोड़ा बहुत कष्ट पाता है।

इस योग के प्रभाव से जातक के शरीर में कभी बिमारियाँ घेर लेती है जिसमें थोड़ा अधिक धन खर्च हो जाने के कारण आर्थिक स्थिति नाजुक हो जाती है पर कालान्तर में वह सामान्य हो जाता है। जातक को शासन के तरफ से थोड़ा बहुत मुसीबतें आती हैं और अधिकारियों से कभी-कभी मतान्तर हो जाता है एवं न्यायालय से कभी दण्ड जुर्माना या आंशिक रूप से सजा मिल सकती है तथा समय-समय पर चिन्ता परेशानी लग जाती है। जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी-कभी कष्टमय हो जाता है। घर में सुख शान्ति का थोड़ा बहुत अभाव रहता है।

इस योग के कारण जातक अनेक धन्धा करता है, पर स्थाई सफलता सदैव संदिग्ध रहती है। सुख प्राप्ति के लिए थोड़ा बहुत जातक को संघर्ष करना पड़ता है और सामाजिक मान सम्मान व प्रतिष्ठा सामान्य रहती है।

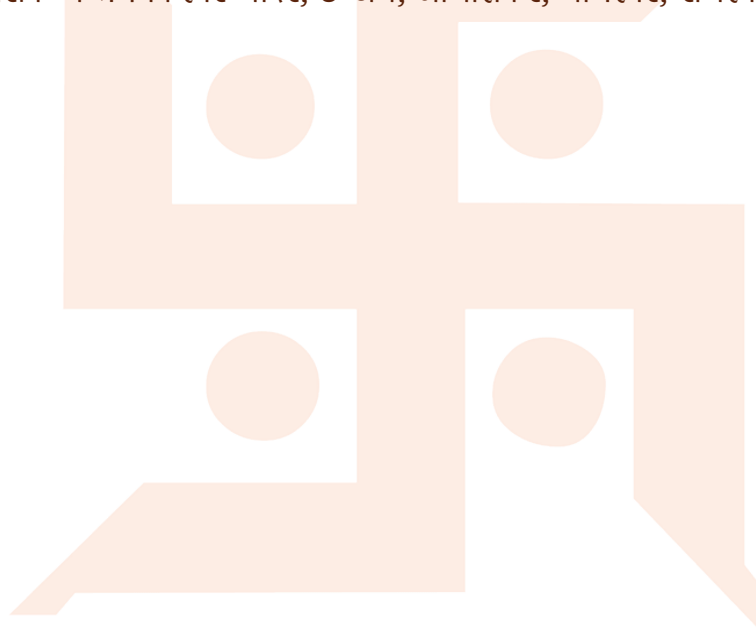
यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. 'ॐ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अद्वारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।

10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ॐ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड़्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।



पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम भाव के स्वामी पर शनि और राहु का प्रभाव है ।
- नवम भाव का स्वामी नीचस्थ है और उस पर राहु का प्रभाव है ।
- लग्नेश अष्टम भाव में स्थित है और उस पर शनि का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में बुध, शुक्र और शनि के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आशीर्वाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें ।

आपकी कुण्डली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें । 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें ।

आपकी कुंडली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें। पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें। शम्मी की समिधा से हवन करें। बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें। गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

चतुर्थभाव में सूर्य हो तो जातक परमसुन्दर, कठोर, पितृधननाशक, चिन्तास्त, भाईयों से वैर करने वाला, गुप्तविद्या प्रिय एवं वाहन सुखहीन होता है।

मेष राशि में रवि हो तो जातक उदार, गम्भीर, शूरवीर, आत्मबली स्वाभिमानी, प्रतापी, चतुर, पित्तविकारी, युद्धप्रिय, साहसी एवं महत्वाकांक्षी होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य चतुर्थ भाव में स्थित है। अतः पिता के आप प्रिय होंगे उनका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपका यत्नपूर्वक सहयोग करते रहेंगे। पिता से आपको धन, वाहन तथा अन्य प्रकार से सम्पत्ति अर्जित करते रहेंगे। इसके साथ ही नौकरी तथा व्यापार में भी आप उनसे सहयोग प्राप्त करते रहेंगे तथा उन्हीं के सहयोग से उन्नति भी करेंगे।

आप के मन में उनके प्रति सम्मान एवं आदर का भाव विद्यमान रहेगा एवं उनकी आज्ञा पालन में भी रुचि रहेगी। आपके परस्पर मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु वह क्षणिक रहेगा। इसके अतिरिक्त जीवन में आप हमेशा उनके सुख दुःख का भी ध्यान रखेंगे तथा अवसरानुकूल वांछित सहायता भी प्रदान करेंगे।

चन्द्र

लग्न (प्रथम) में चन्द्रमा हो तो जातक बलवान्, सुखी, स्थूलशरीर, गान वाद्य प्रिय, ऐश्वर्यशाली, व्यवसायी, उदार, धनी एवं विद्वान होता है।

मकर राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सदाचारी, पत्नी और सन्तान से प्रेम करने वाला, कवि, क्रोधी, लोभी, संगीतज्ञ, बात को शीघ्र समझने वाला एवं स्वार्थी होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति लग्न में विद्यमान है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य आपके ग्रहों के शुभप्रभाव से अच्छा रहेगा एवं वे लम्बी आयु प्राप्त करेंगी। धन सम्पत्ति की भी उनको प्राप्ति होगी तथा इससे वे प्रायः युक्त ही रहेंगी। आपके प्रति उनका पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में सभी शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको यथोचित सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी। आपके परस्पर अच्छे संबंध रहेंगे एवं आपसी मतभेदों की अल्पता रहेगी।

आप भी उनके प्रति हार्दिक सम्मान तथा आदर की भावना रखेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। इससे आप लोगों के आपसी विश्वास में वृद्धि होगी जो भविष्य में उन्नति दायक रहेगी। इस प्रकार आप भी जीवन में उनको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे।

मंगल

सातवें भाव में मंगल हो तो जातक वातरोगी, राजभीरु, शीघ्रकोपी, कटुभाषी, स्त्रीदुःखी, धूर्त, मूर्ख, निर्धन, घातकी, धननाशक एवं ईर्ष्यालु होता है।

कर्क राशि में मंगल हो तो जातक कुशाबुद्धिवाला, धनवान्, बदमाश, कुशलचिकित्सक, या सर्जन, चंचलमनवाला सुखाभिलाषी, कृषक, रोगी एवं दुष्ट होता है।

आपके जन्म काल में मंगल सप्तम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी वे अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान की भावना व्याप्त रहेगी तथा हमेशा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके विवाह संबंधी या व्यापार संबंधी कार्यों में भी वे अपना यथाशक्ति योगदान देंगे तथा सदैव आपकी सफलता की कामना करेंगे। इसके साथ ही सुख दुःख में वे आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आप की भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनको समस्त महत्वपूर्ण कार्यों एवं क्षेत्रों में अपना सहयोग प्रदान करेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उसमें तनाव या कटुता आएगी परन्तु कुछ समय पश्चात् सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही उनकी शादी या व्यापार आदि कार्यों में भी आप उनकी वांछित सहायता करते रहेंगे।

बुध

तृतीयभाव में बुध हो तो जातक सद्गुणी, कार्यदक्ष, परिश्रमी, मित्रप्रेमी, भीरु, धर्मात्मा, यात्राशील, व्यवसायी, चंचल, अल्पभातृवान्, विलासी, सन्ततिवान्, कवि, सम्पादक, सामुद्रिकशास्त्र का ज्ञाता एवं लेखक होता है।

मीन राशि में बुध हो तो जातक स्वाभिमानी, सदाचारी, सहनशील, भाग्यवान्, प्रवास में सुखी, मिष्टभाषी, कार्यदक्ष, धनसंही, नकल करने का स्वभाव, चिन्तित एवं छोटे दिल का होता है।

गुरु

षष्ठभाव में गुरु हो तो जातक विवेकी, प्रसिद्ध, ज्योतिषी, विद्वान् सुकर्मरत, दुर्बल, उदार, प्रतापी, नीरोगी, लोकमान्य, बहुत कमशत्रु एवं मधुरभाषी होता है।

मिथुन राशि में गुरु हो तो जातक योग्य वक्ता, सुगठित शरीर, लम्बाकद, उदार, विद्वान्, कई भाषाओं का जानने वाला, अनायास धनप्राप्त करने वाला, लोकमान्य, लेखक एवं व्यवहार कुशल होता है।

शुक्र

पंचम भाव में शुक्र हो तो जातक विद्वान्, प्रतिभाशाली, वक्ता, कवि, पुत्रवान्, लाभयुक्त, व्यवसायी, शत्रुनाशक, उदार, दानी, सद्गुणी, न्यायवान् एवं आस्तिक होता है।

वृष राशि में शुक्र हो तो जातक सुन्दर, ऐश्वर्यवान्, दानी, सदाचारी, सात्त्विक, परोपकारी, अनेक शास्त्रज्ञ, दृढ़, स्वतन्त्रकामुक, शौकीन तबीयत, संगीत-नृत्य तथा अन्य कलाओं में रुचि एवं आलसी होता है।

शनि

अष्टम भाव में शनि हो तो जातक विद्वान् स्थूलशरीर, उदार प्रकृति, कपटी, गुप्तरोगी, वाचाल, डरपोक, कुष्ठरोगी एवं धूर्त होता है।

सिंह राशि में शनि हो तो जातक लेखक, अध्यापक, कार्यदक्ष, हठी, कमसन्तान, अभागा एवं ईर्ष्यालु स्वभाव वाला होता है।

राहु

नवम भाव में राहु हो तो जातक प्रवासी, वातरोगी, व्यर्थ परिश्रमी, दुष्टबुद्धि, भाग्योदय से रहित, तीर्थाटनशील एवं धर्मात्मा होता है।

कन्या राशि में राहु हो तो जातक लोकप्रिय, मधुरभाषी, कविलेखक, गवैया एवं धनी होता है।

केतु

तृतीय भाव में केतु हो तो जातक चंचल, वायुजनित रोगों से पीड़ित, भाई बहन विहीन, धनी, व्यर्थवादी एवं भूतप्रेतभक्त होता है।

मीन राशि में केतु हो तो जातक परिश्रमी, धार्मिक प्रवृत्तिवाला, कर्णरोगी, प्रवासी, चंचल और कार्यपरायण होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। सामान्यतया मकर लग्न में उत्पन्न जातक शांत तथा उदार प्रवृत्ति के व्यक्ति होते हैं तथा अन्य जनों के प्रति उनके मन में प्रेम तथा सहानुभूति का भाव विद्यमान रहता है। इनका मुख मंडल विचारशीलता गम्भीरता एवं शांति से युक्त रहता है तथा ये अत्यंत ही कर्मशील एवं परिश्रमी होते हैं फलतः सांसारिक महत्व के कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करते हैं। इनमें कार्य करने की क्षमता अद्वितीय होती है तथा यही इनके सफलता का रहस्य होता है। साथ ही सेवापरायणता का भाव भी इनमें विद्यमान रहता है फलतः समाज एवं देश सेवा के कार्य में तत्पर रहते हैं। ये साहसी एवं संघर्षशील होते हैं तथापि मन में यदा कदा उदासीनता का भाव भी उत्पन्न होता है जिससे सफलता में खुशी एवं असफलता में इन्हें दुःख नहीं होता है। भौतिकता के प्रति इनका आकर्षण कम होता है। परिश्रम एवं अध्ययनशील होने के कारण अनुसन्धान कार्य या शास्त्रीय विषयों का ज्ञानार्जन करके एक विद्वान के रूप में समाज में इनकी छवि बनती है।

अतः इसके प्रभाव से आप स्वस्थ एवं बल से युक्त होंगे। आप एक आदर्शवादी व्यक्ति होंगे तथा अपने आदर्शों पर स्वतंत्र रूप से आचरण करेंगे। आपके उच्चादर्शों से सभी लोग प्रभावित होंगे तथा आपको यथोचित सम्मान तथा प्रतिष्ठा प्रदान करेंगे। आपके सभी कार्य बुद्धिमतापूर्वक सम्पन्न होंगे एवं उनमें आपको सफलता भी प्राप्त होगी। दार्शनिकता का भाव भी आप में रहेगा एवं शत्रु वर्ग के प्रति आपके मन में सहानुभूति रहेगी अतः आपके सदगुणों से सभी लोग प्रभावित होंगे।

लग्न में चन्द्रमा की स्थिति के प्रभाव से आपका स्वरूप सुन्दर एवं दर्शनीय रहेगा तथा शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं मानसिक सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। आपका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा तथा सभी लोग आपसे प्रभावित होंगे। लेखन अथवा कविता के प्रति आप रूचिशील रहेंगे तथा कवि या लेखक के रूप में प्रतिष्ठित भी हो सकते हैं। साथ ही कला एवं संगीत के प्रति भी आपका रुझान रहेगा। लेकिन यदा कदा आप लोभ एवं क्रोध के भाव का भी प्रदर्शन करेंगे जिससे आपको अनावश्यक समस्याएं एवं परेशानी होंगी। आप एक सदाचारी पुरुष होंगे तथा नैतिक कर्तव्यों का यत्नपूर्वक पालन करने में तत्पर रहेंगे। पत्नी के प्रति आपके मन में आकर्षण तथा प्रेम का भाव रहेगा। फलतः आपका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा। लेकिन आपके अधिकांश सांसारिक कार्य स्त्री के कहने पर ही सम्पन्न होंगे अतः इससे परिवार के अन्य सदस्य आपसे अप्रसन्न तथा असन्तुष्ट हो सकते हैं। आपके पुत्र भी सुंदर एवं विख्यात होंगे तथा उनसे आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होगी।

धर्म के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा होगी तथा विधि पूर्वक आप समय समय पर धार्मिक कार्य कलापों तथा अनुष्ठानों को सम्पन्न करेंगे। इससे आपको आत्मिक शांति की प्राप्ति होगी। साथ ही तीर्थ यात्राओं में भी आपकी रूचि होगी। बन्धु एवं मित्र वर्ग के आप प्रिय एवं आदरणीय होंगे तथा उनसे आपको इच्छित सुख एवं सहयोग मिलता रहेगा। इस प्रकार आप

शांत उदार गुणवान एवं परिश्रमी पुरुष होंगे तथा आनंदपूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।



धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान पुरुष होंगे तथा बुराइयों के प्रति हमेशा सजग रहेंगे। साथ ही आप एक स्पष्ट वक्ता होंगे तथा जो कुछ भी मन में हो स्पष्ट रूप से अन्य जनों के समक्ष कह देंगे। आपकी प्रवृत्ति निस्वार्थी रहेगी तथा इसी भाव से आपके सांसारिक कार्य कलाप सम्पन्न होंगे परन्तु अन्य जनों की बातों से आप शीघ्र ही सहमत हो जाएंगे इससे यदा कदा अनावश्यक परेशानियां भी हो सकती हैं। आप एक कर्तव्य परायण व्यक्ति होंगे तथा परिवार के प्रति आपका अत्यधिक लगाव रहेगा। साथ ही घर को भी आप हमेशा सुन्दर तथा आकर्षक रूप से देखना पंसद करेंगे।

आप परिवार के ओर से सर्वदा चिन्तित रहेंगे तथा मानसिक एवं भावनात्मक रूप से पारिवारिक सदस्यों से जुड़े रहेंगे। आप किसी भी चीज को शान्ति पूर्वक ग्रहण करेंगे तथा अनावश्यक चंचलता के भाव की आप में न्यूनता रहेगी। आपकी वाणी मधुर रहेगी तथा अन्य लोग वाणी से पूर्ण प्रभावित रहेंगे तथा आप स्पष्ट रूप से अपने विचारों को अभिव्यक्त करेंगे। आपको विभिन्न स्वादों का आस्वादन करना प्रिय लगेगा। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा पारिवारिक जनों के साथ धार्मिक कार्य कलापों को सम्पन्न करते रहेंगे इसके अतिरिक्त किसी धनवान व्यक्ति के सहयोग से आप इच्छित धनार्जन करेंगे तथा सज्जनों एवं महात्माओं का आदर सत्कार करते रहेंगे। साथ ही अवसरानुकूल परोपकार संबंधी कार्यों को भी आप सम्पन्न करते रहेंगे।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्मसमय में चतुर्थ भाव में मेषराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है तथा सूर्य भी अपनी उच्चराशि में स्थित होकर चतुर्थभाव में ही बैठा है। अतः इसके शुभ प्रभाव से जीवन में आप समस्त सुखों का उपभोग करने में समर्थ होंगे। आधुनिक एवं भौतिक सुख-संसाधनों से आप युक्त होंगे तथा समाज में अपना उच्च स्तर बनाए रखेंगे। आप एक वैभवशाली व्यक्ति भी होंगे जिससे समाज में आप एक प्रतिष्ठित व्यक्ति माने जाएंगे तथा सभी लोग आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे।

आप एक भाग्यवान व्यक्ति होंगे तथा चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को अवश्य प्राप्त करेंगे। पिता से भी आपको प्रचुर मात्रा में चल एवं अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी इससे आपके ऐश्वर्य में अभिवृद्धि होगी तथा अपनी योग्यता एवं बुद्धिमता से प्रचुर मात्रा में धन सम्पत्ति अर्जित करेंगे। आपकी कुंडली में चल की अपेक्षा अचल सम्पत्ति से विशेष लाभ के योग बनते हैं। इसके अतिरिक्त सूर्य के प्रभाव से आप विवादित सम्पत्ति से भी लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

आपका घर विशाल, सुन्दर एवं आकर्षक होगा तथा आधुनिक सुख-सुविधाओं एवं भौतिक उपकरणों से सुसज्जित होगा। इसकी स्वच्छता एवं आकर्षण बनाए रखने के लिए आप स्वयं भी रुचिशील होंगे। आपका निवास स्थान किसी अच्छी कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी बुद्धिमान एवं शिक्षित होंगे। इसके अतिरिक्त उत्तम वाहन से आप युक्त होंगे तथा सुख-पूर्वक इसका उपभोग करेंगे। इनकी संख्या एक से अधिक भी हो सकती है।

आपकी माताजी तेजस्वी, बुद्धिमान, शिक्षित एवं व्यवहार कुशल महिला होंगी तथा कर्तव्य परायणता का भाव भी उनमें विद्यमान होगा फलतः परिवार पर उनका पूर्ण नियंत्रण होगा तथा सभी लोग उनके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। आपके प्रति उनके मन में प्रबल स्नेह का भाव होगा तथा जीवन में आपकी चहुंमुखी उन्नति में उनका मुख्य योगदान होगा। आपको समय समय पर उनसे वांछित, नैतिक, आर्थिक एवं अन्य प्रकार से सहयोग भी मिलता रहेगा। आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव रखेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे।

शिक्षा के प्रति प्रारंभ से ही आपकी पूर्ण रुचि होगी तथा छोटी कक्षाओं से ही आप अच्छे अंक अर्जित करके अपनी बुद्धिमता का परिचय देंगे। स्नातक परीक्षा भी आप ससम्मान उत्तीर्ण करेंगे तथा इससे आपके उज्ज्वल भविष्य के मार्ग प्रशस्त होंगे। इससे आपके आत्म-विश्वास के भाव में भी वृद्धि होगी तथा मित्रों एवं सामाजिक जनों के मध्य आदर में वृद्धि होगी एवं उनसे उचित प्रोत्साहन भी मिलगा। इसके अतिरिक्त आप तकनीकी पाठ्यक्रम में कोई उच्च डिग्री या शिक्षा भी प्राप्त कर सकते हैं।

नैसर्गिक, तेजस्वी एवं अष्टमेश सूर्य की चतुर्थ भाव में स्थिति के प्रभाव से जीवन में मध्यावस्था के बाद आप न्यूनाधिक रूप से रक्तचाप या हृदय संबंधी परेशानी की अनुभूति कर सकते हैं। अतः प्रारंभ से ही खान-पान का उचित ध्यान रखा जाय तो ऐसी संभावनाओं में कमी

आएगी तथा आपका समय सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा।



प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचमभाव में वृषराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। तथा शुक्र भी स्वग्रही होकर पंचमभाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से आप एक तीव्र एवं निर्मल बुद्धि के स्वामी होंगे तथा अपने समस्त कार्य-कलापों को बुद्धिमता से ही सम्पन्न करेंगे। आप में शीघ्र एवं सकारात्मक निर्णय लेने की शक्ति भी विद्यमान होगी जिससे आप समय समय पर वांछित लाभ एवं सफलताएं प्राप्त करने में समर्थ होंगे जिससे अन्य सामाजिक जन आपसे प्रभावित होंगे। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्म में आपकी रुचि होगी तथा इनके ज्ञानार्जन में प्रवृत्त होंगे परन्तु आधुनिक साहित्य, कविता, कला या कानून आदि में भी आपकी पूर्ण रुचि होगी तथा परिश्रम पूर्वक इनका ज्ञानार्जन करके नवीन सिद्धांत प्रतिपादित प्रभुत्व करने में समर्थ होंगे। जिससे आप समाज में आदरणीय स्तर प्राप्त करेंगे।

पंचमभाव में शुक्र की स्थिति के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में आप काफी रुचिशील होंगे तथा ऐसे सम्बन्धों में आपको मानसिक सन्तुष्टि की प्राप्ति होगी तथा भावनात्मक आकर्षण बना रहेगा लेकिन प्रेम-प्रसंगों में आपको मर्यादा एवं नैतिकता का पालन करना चाहिए। इससे आप अनावश्यक समस्याओं से सुरक्षित होंगे तथा समाजिक सम्मान भी बना रहेगा।

संतति भाव में स्वग्रही शुक्र की स्थिति से आपको यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी। तथा कन्या संतति की अधिकता होगी। आपकी संतति सुन्दर, स्वस्थ, आकर्षक, व्यक्तित्व एवं परिश्रमी होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में वांछित उन्नति तथा सफलता अर्जित करेंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव होगा तथा उनकी आज्ञा का पालन करना वे अपना विशिष्ट कर्तव्य समझेंगे। वे समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को उन्हीं की सलाह एवं सहयोग से पूर्ण करेंगे जिससे परस्पर सदभाव, विश्वास एवं सम्बन्धों में मधुरता का भाव बना रहेगा। पिता की अपेक्षा माता के प्रति बच्चों के मन में पूर्ण विशिष्ट लगाव होगा तथा उन्हीं के सहयोग से अपनी व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान करेंगे लेकिन आदर भाव दोनों के प्रति बराबर होगा। इसके अतिरिक्त आप भाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा बच्चे वृद्धावस्था में तन-मन-धन से आपकी सेवा करेंगे।

अध्ययन के क्षेत्र में आपकी संतति प्रतिभाशाली एवं योग्य सिद्ध होगी तथा प्रारंभ से ही इच्छित सफलताएं अर्जित करके अपने उज्ज्वल भविष्य का मार्ग प्रशस्त करेंगे। आप भी उनकी शिक्षा-दिक्षा का उचित प्रबन्ध करेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगे। फलतः वे आपकी महत्वकांक्षाओं की पूर्ति करने में समर्थ होंगे। इसके अतिरिक्त अपने उत्तम कार्य कलापों एवं व्यवहार कुशलता से अन्य जनों को प्रभावित एवं प्रसन्न करने में समर्थ होंगे तथा सभी लोग उन्हें यथोचित स्नेह तथा प्रोत्साहन प्रदान करेंगे।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है तथा मंगल भी नीच राशि में सप्तम भाव में ही स्थित है। सामान्यतया कर्क राशि की सप्तम भाव में स्थिति से जातक सुशील चंचल बुद्धिमान एवं धनाढ्य होता है लेकिन नीचस्थ मंगल के प्रभाव से वह चिड़चिड़ा स्वार्थी तथा स्वाभिमानी प्रवृत्ति का होता है एवं सहिष्णुता के भाव की न्यूनता रहती है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी सुशील स्वभाव की महिला होंगी तथापि उग्रता एवं चिड़चिड़ापन भी उनमें विद्यमान होगा। सांसारिक कार्यों को वह साहस एवं पराक्रम से सम्पन्न करेंगी तथा उनके साहसी कार्यों से अन्य लोग भी प्रभावित होंगे। नीचस्थ मंगल के प्रभाव से उनकी प्रवृत्ति स्वार्थी होगी अतः समाज एवं परिवार के प्रति ईमानदारी से अपने कर्तव्य का पालन नहीं करेंगी।

आपकी पत्नी लालिमा लिए गौर वर्ण की महिला होंगी तथा उनका कद भी उन्नत होगा। शारीरिक संरचना उनकी दुबली पतली होगी परन्तु शरीर के अंग प्रत्यंग सुडौल एवं पुष्ट होंगे इससे उनके सौन्दर्य में वृद्धि होगी एवं व्यक्तित्व में आकर्षक होगा। सौन्दर्य को बनाए रखने के लिए वह आधुनिक सौन्दर्य प्रसाधनों का भी प्रयोग करेंगी तथा भौतिकता के प्रति भी आकर्षण होंगा। कर्क राशि के प्रभाव से वह कला एवं संगीत में रुचिशील होंगी एवं सुंदर एवं कलात्मक वस्तुओं के प्रति मन में लगाव होगा तथा उनके संग्रह में तत्पर रहेगी।

सप्तम भाव में मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में विलम्ब होगा एवं विवाह पूर्व भी वार्ताओं में गतिरोध आएंगे। आपका विवाह बंधु या संबंधियों के माध्यम से सम्पन्न होगा। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्य सुखी रहेगा।

आपका विवाह किसी समृद्ध एवं शिक्षित परिवार में होगा तथा विवाह में आपको प्रचुर मात्रा में दहेज के रूप में धन सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। साथ ही अन्यत्र से भी उपहार स्वरूप बहुमूल्य वस्तुएं एवं उपकरण प्राप्त होंगे विवाह के बाद सास ससुर से आपके विशेष मधुर संबंध नहीं रहेंगे परन्तु औपचारिकता बनी रहेगी फलतः समयानुसार एक दूसरे के प्रति अपनी सदाशयता के परिचय देंगे।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का विशेष सेवा भाव नहीं होगा तथा सुख दुख में उनकी यथोचित सेवा नहीं करेंगी। देवर एवं ननद भी उनकी उग्रता तथा चिड़चिड़ेपन से अप्रसन्न होंगे तथा उन्हें किसी भी प्रकार का सम्मान एवं सहयोग प्रदान नहीं करेंगे।

व्यापार या महत्वपूर्ण कार्यों में साझेदारी के लिए स्थिति प्रतिकूल रहेगी तथा इससे लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। अतः साझेदारी के कार्यों की जीवन में यत्नपूर्वक उपेक्षा ही करनी चाहिए।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में तुलाराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। तुला राशि वायुतत्व युक्त राशि है अतः उसके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा श्रमसाध्य के भाव की इसमें न्यूनता होगी। साथ ही इसमें आप समय समय पर परिवर्तन भी करते रहेंगे तथा ऐसे तात्कालिक परिवर्तनों से आपको लाभ भी होगा तथापि अधिक परिवर्तनशीलता की आपको उपेक्षा करनी चाहिए।

आपके लिए आजीविका संबंधी क्षेत्र कला संगीत, सिनेमा, नाटक, दूरदर्शन विभाग, इलैक्ट्रॉनिक्स, फिल्म निर्देशन, कम्प्यूटर, एयर लाइंस आदि विभाग शुभ एवं अनुकूल रहेंगे। इनमें कार्य करने से आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा आपका भविष्य उज्ज्वल रहेगा। साथ ही उन्नति में अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का भी सामना नहीं करना पड़ेगा अतः आपको यत्नपूर्वक उपरोक्त विभागों में ही कार्य का चयन करना चाहिए।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए सोना, चांदी, हीरा आदि धातु एवं रत्नकार्य, चतुष्पद या वाहन संबंधी क्रय विक्रय, सौन्दर्य प्रसाधन एवं आलंकारिक वस्तुओं का व्यापार, रेशमी या मूल्यवान वस्त्रों का व्यापार या आयात निर्यात, कीमती मदिरा, इलैक्ट्रॉनिक्स या कम्प्यूटर कनसलटेंसी एवं फिल्म निर्माण आदि के कार्य में भी आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ भी अर्जित होगा। अतः उपरोक्त वस्तुओं या क्षेत्रों में ही व्यापार का प्रारंभ करें।

जीवन में आपको वांछित मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा मिलेगी तथा किसी सम्मानित उच्चाधिकार प्राप्त पद को अर्जित करने में भी समर्थ होंगे। साथ ही समाज में भी आपकी प्रतिष्ठा एवं प्रसिद्धि दूर दूर तक व्याप्त होगी एवं सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। आप किसी सामाजिक या सांस्कृतिक संस्था के सम्मानित सदस्य या पदाधिकारी हो सकते हैं एवं क्लबों आदि में भी आप आदर की दृष्टि से देखे जाएंगे। अतः अपनी उपलब्धियों से आप सन्तुष्ट रहेंगे।

आपके पिता शिक्षित बुद्धिमान प्रभावशाली एवं आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होंगे तथा अपने उत्तम कार्य कलापों से अन्य जनों को प्रसन्न तथा प्रभावित करेंगे जिससे उन्हें सामाजिक सम्मान की प्राप्ति होगी। आपकी उच्च शिक्षा के प्रति वे पूर्ण जागृत होंगे तथा इसका उच्चस्तर पर प्रबंध करके आपको योग्य व्यक्ति बनाएंगे। साथ ही आपके कार्यक्षेत्र की उन्नति एवं सफलता में उनका विशिष्ट योगदान होगा। आप भी स्वपरिश्रम एवं योग्यता से प्रगति के मार्ग पर अग्रसर होंगे तथा पिता के सम्मान में वृद्धि करेंगे। आपके परस्पर संबंधों में भी मधुरता होगी तथा सैद्धान्तिक एवं वैचारिक समानता बनी रहेगी। इसके अतिरिक्त सांसारिक महत्व के कार्यों को एक दूसरे की सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे।

वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि तृतीय भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु द्वितीय भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमें लग्न स्थान में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु छठे भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमें सप्तम भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें अष्टम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। आपके कार्य क्षेत्र में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाई का अनुभव करेंगे। इसलिए बिना किसी पर विश्वास किये आप अपनी बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें।

02 जून के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। आप अपने कार्य व्यवसाय में उन्नति करेंगे। आमदनी के नये-नये स्रोत मिलेंगे। इस अवधिमें आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे उसमें आपको सफलता मिलेगी। आपको अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपके कार्यों में सफलता की उम्मीद और बढ़ जायेगी। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर रहे हैं तो आपको इच्छित लाभ प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आर्थिक स्थिति में उतार-चढ़ाव की संभावना बनी रहेगी। द्वितीयस्थराहु के प्रभाव से धन संचित करने में बाधा उत्पन्न होगी और धनागम के सारे मार्ग प्रभावित होंगे। आपको अपने अनावश्यक खर्चों पर अंकुश लगाना चाहिए। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें।

02 जून के बाद आपके धनागम के स्रोत खुलेंगे जिससे आप की आर्थिक स्थिति कुछ अच्छी होगी। परिवार में मांगलिक कार्यों में पैसा खर्च हो सकता है। आपको मित्र या जीवनसाथी के माध्यम से भी धन लाभ हो सकता है। 31 अक्टूबर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है अतः उस समय कोई बड़ा निवेश न करें।

घर-परिवार, समाज

द्वितीय स्थान के राहु आपके परिवार में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न कर सकते हैं जिससे आपका परिवारिक माहौल खराब हो सकता है। आपको अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखना चाहिए नहीं तो परिवार में किसी के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है। छठे स्थान केगुरु आपके मातुल पक्ष के साथ आपके संबंध खराब कर सकते हैं।

02 जून के बाद जीवनसाथी के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। यदि आप

अविवाहित हैं तो आपका विवाह हो जाएगा। तृतीयस्थ शनि पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से सामाजिक प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण संतान के लिए अच्छा नहीं है। उसका स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है, जिसका नकारात्मक प्रभाव उसकी शिक्षा पर भी पड़ सकता है।

02 जून के बाद आपके बच्चे के लिए समय अच्छा हो रहा है। उसको अपने कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी। यदि वह उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहता है तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उसका प्रवेश हो जाएगा। यदि आपका दुसरा बच्चा विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिहाज से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम नहीं रहेगा। छठे स्थान का गुरुछोटी-मोटी बीमारियों से स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। मौसमजनित बीमारियां भी हो सकती हैं। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरूरी होगा।

02 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर शुभ हो रहा है। आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी। लग्न पर गुरु की दृष्टि होने से मन में अच्छे विचार आएंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर में सफलता प्राप्ति के लिए आप को अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। जो विद्यार्थी विदेश या घर से दूर जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय अनुकूल है।

02 जून के बाद का समय प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता के लिए अनुकूल है। यदि कोई व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं तो उसमें सफलता प्राप्त होगी।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं।

तृतीयस्थ शनि आपकी छोटी-मोटी यात्रा के साथ-साथ लम्बी यात्रा भी कराते रहेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष के पूर्वार्द्ध में मानसिक द्वंदता के कारण आपका मन पूजा पाठ में नहीं लगेगा परन्तु 02 जून से गुरु ग्रह का गोचर अच्छा हो रहा है। उस समय आप अपने

जीवनसाथी के साथ पारिवारिक कल्याण के लिए कोई विशेष पूजा संपन्न करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।



वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि तृतीय भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं तृतीय भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष लग्न स्थान में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं अष्टम भाव में गोचर करेंगे, और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं नवम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध श्रेष्ठ रहेगा। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से आप व्यापार में कुछ अच्छा करेंगे। अपने भाई या किसी के साथ मिलकर व्यापार कर सकते हैं, अच्छा लाभ होगा। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे। नौकरी करने वालों के लिए समय सामान्य रहेगा।

जून के बाद समय काफी प्रतिकूल हो रहा है कार्य व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बन सकती है अतः कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें पुराने चले आ रहे कार्य को और अच्छे ढंग से चलाएं। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके कार्य क्षेत्र में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं इसलिए बिना किसी पर विश्वास किये आप अपनी बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें। भूमि भवन से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों को नुकसान भी हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बढ़िया रहेगा। एकादश स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी, जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। निष्ठा के साथ धनार्जन करेंगे। आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में पत्नी एवं भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा।

जून के बाद गुरु एवं शनि दोनों का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आय के मार्ग प्रभावित हो सकते हैं। इस समय किसी को उधार पैसा नहीं देना चाहिए नहीं तो पैसा डूब सकता है। निवेश के लिए यह समय उपयुक्त नहीं है अतः कोई निवेश न करें। 26 नवम्बर के बाद समय फिर अनुकूल हो रहा है। उस समय आप बहुत अच्छी बचत कर सकते हैं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से यह वर्ष ठीक-ठाक रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से आपका पत्नी के साथ समन्वय मधुर होगा। अविवाहित जातकों का विवाह संस्कार होसकता है। समाज में मान-सम्मान बना रहेगा।

जून के बाद समय अनुकूल नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान का शनि पारिवारिक अनुकूलता को भंग कर सकता है। परिवार में एक-दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव में कमी होगी जिससे विरोधाभास व वैमनस्य की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। परिवार में किसी के साथ वैचारिक मतभेद भी उत्पन्न हो सकता है। माता-पिताका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है जिसका नकारात्मक प्रभाव पूरे परिवार पर पड़ेगा।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय काफी अच्छा है। यदि आपकी दूसरी संतान विवाह के योग्य है तो उसका विवाह हो जाएगा।

26 जून के बाद आपको संतान संबंधित परेशानी हो सकती है। आपके बच्चों का स्वास्थ्य अनुकूल नहीं होने के कारण उनकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है। उनको सफलता प्राप्त के लिए लगातार कठिन परिश्रम करने की आवश्यकता है। 26 नवम्बर के बाद समय काफी अच्छा हो जाएगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। लग्न स्थान का राहु अचानक आपका स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। मौसम जनित बीमारियों से भी आप परेशान हो सकते हैं परन्तु लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि से आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपको खान-पान के साथ साथ अपनी दिनचर्या भी सुव्यवस्थित रखनी चाहिए। सुबह सुबह टहलना भी आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

जून के बाद स्वास्थ्य के लिहाज से समय अच्छा नहीं रहेगा। शनि, राहु एवं गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण कोई लम्बी बीमारी होने के संकेत मिल रहे हैं। यदि पहले से किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो यह समय आपके लिए ज्यादा मुश्किल भरा हो सकता है। अष्टमस्थ गुरु जल तत्त्वाशि में होने कारण आप कफ, पाचन व पेट संबंधित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। इस समय के अंतराल में स्वास्थ्य संबंधित लापरवाही आपके लिए खतरा उत्पन्न कर सकती है। 26 नवम्बर के बाद नैसर्गिक रूप से आपके स्वास्थ्य में सुधार आना शुरु हो जाएगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। आप परिश्रम के बल पर प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त करेंगे। विद्यार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध व्यवसायिक शिक्षा व तकनीकी शिक्षा के लिए अच्छा है।

जून के बाद समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा। उस समय आपको परिश्रम का फल नहीं मिलेगा, जिससे आपके करियर में सफलता की उम्मीद कम ही लग रही है। उच्च शिक्षा

प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए 26 नवम्बर के बाद समय अच्छा हो रहा है।

यात्रा-तबादला

तृतीयस्थ शनि की नवम भाव पर दृष्टि प्रभाव से आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी।

जून के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अपने घर से दूर स्थानान्तरण हो सकता है। द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा रहेगा। पूजा पाठ के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा। पत्नी के साथ हवनादि कार्य संपन्न करेंगे। जून के बाद अधिक व्यस्तता के कारण आप पूजा-पाठ व धार्मिक कार्य कम ही कर पाएंगे।

- सूर्योदय से पहले उठकर सूर्य नमस्कार करें एवं सूर्य को अर्घ्य दें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें या लोहे के तवे का दान करें।
- गुरुवार के दिन केला या बेसन के लड्डू गरीबों में बांटे और व्रत रखें।

वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि तृतीय भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं लग्न भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु नवम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यावसायिक उन्नति के साथ होगा परन्तु फरवरी से व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बन रही है। गुप्त शत्रु आपके कार्यों में रुकावट डालने की चेष्टा करेंगे। चतुर्थस्थ शनि के प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके प्रतिकूल स्थान पर भी हो सकता है।

24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर फिर से अनुकूल होने से कार्य व्यवसाय में कुछ सुधार होगा। कार्य-कुशलता एवं दक्षता के बल पर आप अपनी सभी समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे साथ ही किसी बड़ी कम्पनी के साथ कार्य करने का शुभ अवसर प्राप्त होगा। प्रोपर्टी से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ होगा।

धन संपत्ति

सट्टा, ग्रेच्युटी या लॉटरी के माध्यम से आपको लाभ प्राप्त हो सकता है। शेयर बाजार से जुड़े व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। फरवरी के बाद आपके संचित धन में कमी आ सकती है। आय के मार्ग भी प्रभावित हो सकते हैं।

राहु के गोचर के बाद कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कुछ कमजोर हो सकती है। 24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर फिर से अनुकूल होने से आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से शुभ फलदायक रहेगा। पूरे परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। तृतीय स्थान का शनि छोटे भाई-बहनों के लिए बहुत अच्छा है और उनकी उन्नति के मार्ग प्रशस्त करेगा। समाज में आपका मान सम्मान बढ़ेगा। आपके बच्चों के विवाह की संभावना भी बन रही है। फरवरी के बाद आपके माता पिता के लिए समय बहुत अच्छा हो रहा है। मातुल पक्ष के लोगों के साथ संबंध अच्छा नहीं रहेगा।

24 जुलाई के बाद चतुर्थ स्थान का शनि आपके पारिवारिक माहौल को खराब कर सकता है। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना व समर्पण में कमी आएगी जिसके कारण आपकी पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए बहुत शुभ रहेगा। आपको बच्चों के बारे में शुभ समाचार मिलेंगे। आपके बच्चे शिक्षा के क्षेत्र में अच्छी उन्नति करेंगे।

सन्तान इच्छुक जातकों के लिए गर्भाधान का शुभ योग बन रहा है। आपकी दूसरे संतान के लिए समय अच्छा नहीं है। वह अपने लक्ष्य तक पहुंचने में कठिनाई महसूस करेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं रहेगा। लग्न स्थान का राहु स्वास्थ्य के लिए बहुत अच्छा नहीं होता। अपने स्वास्थ्य को लेकर हमेशा सचेत रहना चाहिए क्योंकि राहु अचानक ही शारीरिक परेशानी देते हैं। खान-पान के साथ अपनी दिनचर्या को भी सुधारें।

24 मई के बाद समय और प्रभावित हो रहा है। उस समय स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता है। योगाभ्यास करना लाभप्रद रहेगा। पारिवारिक परेशानी के कारण दिमागी तनाव न पालें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

फरवरी के बाद समय प्रभावित हो रहा है। उस समय आपको करियर में सफलता पाने के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा। विद्यार्थियों की पढ़ाई के प्रति रूचि बनी रहेगी परन्तु पढ़ाई में व्यवधान भी बना रहेगा।

24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण जो व्यक्ति इलेक्ट्रॉनिक या सॉफ्टवेयर से संबंधित शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं उनके लिए समय काफी अच्छा है। तकनीकी शिक्षा या उच्च शिक्षा में भी आपको सफलता प्राप्त हो सकती है।

यात्रा-तबादला

तृतीय एवं नवम भाव पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से वर्षारम्भ में ही आपकी अधिक यात्राएं होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ भी प्राप्त होगा। फरवरी के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

यह परिवर्तन आपके प्रतिकूल स्थान पर होगा। द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा भी करेंगे। 26 जून के बाद आपकी छोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। नवमस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी धार्मिक यात्राएं भी हो सकती हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा परन्तु फरवरी के बाद मानसिक अस्थिरता के कारण पूजा-पाठ में मन कम ही लगेगा। 24 जुलाई के बाद पंचम भाव

पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप गुरु मन्त्र ले कर साधना भी कर सकते हैं।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा सुश्रूषा करें।
- केला या पीली वस्तु का दान करें। वीरवार का व्रत करें एवं बेसन के लड्डू दान करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें या शनि ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।



वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि चतुर्थ भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु द्वादश भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु दशम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं दशम भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में दशमस्थ गुरु पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है। अपने से बड़े अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। आपके अधीनस्थ कर्मचारी आपका सहयोग करेंगे। 29 मार्च के बाद भाग्य आपके अनुकूल हो रहा है। आपके कार्य क्षेत्र में सफलता का प्रतिशत और बढ़ सकता है। द्वादशस्थ राहु के कारण आपके कार्यों में गुप्त शत्रु विघ्न उत्पन्न कर सकते हैं जिसके कारण आप कुछ परेशान हो सकते हैं परन्तु अपने बौद्धिक बल के द्वारा उन पर भी विजयी प्राप्त कर लेंगे और आपके कार्यों पर कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ेगा।

25 अगस्त के बाद सप्तम स्थान पर शनि की दृष्टि प्रभाव से कार्य व्यवसाय में कुछ परेशानी आ सकती है। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो साझेदार के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में बुद्धिमानी से काम लें। 05 अक्टूबर के बाद भूमि से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक रूप से सामान्यतः अनुकूल रहेगा। धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी लेकिन पारिवारिक खर्च अधिक होने के कारण बचत नहीं कर पाएंगे। आप अपनी भौतिक सुख सुविधा पर अधिक खर्च करेंगे। चतुर्थस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन एवं वाहन इत्यादि का भी सुख प्राप्त होगा। द्वादशस्थ राहु के कारण अचानक कुछ अनावश्यक खर्च भी आ सकते हैं। 29 मार्च के बाद अपने बच्चों की उच्च शिक्षा पर भी व्यय करेंगे।

25 अगस्त से द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। इस समय के अंतराल में आप इच्छित बचत करने में भी सफल होंगे। घर परिवार में मांगलिक कार्य होंगे उसमें भी आपके पैसे खर्च होंगे।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ पारिवारिक रूप से अच्छा रहेगा। चतुर्थ स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के

संयुक्त गोचरीय प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। परिवार के सभी सदस्यों का अच्छा सहयोग मिलेगा परन्तु 29 मार्च के बाद आपके घरेलू माहौल में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न हो सकती हैं। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से समाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

25 अगस्त से चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में परस्पर सहयोग एवं भावनात्मक प्रेम में वृद्धि होगी। परिवार के प्रति आपका आकर्षण भी बढ़ेगा। माता पिता के लिए यह समय काफी अच्छा रहेगा। मालुत पक्ष के लोगों के साथ आपके संबंध मधुर होंगे।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा परन्तु मार्च के बाद बहुत अच्छा हो रहा है। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। शिक्षा-दीक्षा के प्रति इनकी रुचि बढ़ेगी। अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो सकता है।

08 अगस्त के बाद संतान संबंधित परेशानी हो सकती है। पंचम स्थान का शनि आपके बच्चों की शिक्षा में व्यवधान उत्पन्न कर सकते हैं।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम नहीं रहेगा। स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहने के कारण मानसिक परेशानी बनी रहेगी। 29 मार्च के बाद गुरु ग्रह की दृष्टि लग्न पर होगी जिसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत हैं। मानसिक शांति, प्रसन्नता व सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

25 अगस्त से अचानक आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है या मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान हो सकते हैं। सुबह सूर्योदय के पहले उठकर घूमना या व्यायाम करना आपके स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

छठे स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त होगी। आपको मनोनुकूल नौकरी मिल सकती है। 29 मार्च के बाद विद्यार्थियों को करियर में सफलता मिलेगी।

शनि ग्रह के गोचर के बाद विद्यार्थियों को करियर के प्रति सजग रहने की आवश्यकता है। अतः आप अपने पूर्ण मन से प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करें और करियर के प्रति सजग रहें।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। द्वादशस्थ राहु के प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी होगी। 29 मार्च के बाद छोटी यात्राएं होंगी। ये यात्राएं आपके लिए अनुकूल व उन्नति कारक सिद्ध हो सकती हैं। इन यात्राओं के दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

25 अगस्त के बाद आप पूरे परिवार के साथ किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे। अपने जन्म स्थल से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शान्ति

वर्ष के प्रारम्भ में घरेलू सुख शान्ति के लिए कोई विशेष पूजा-पाठ सम्पन्न करेंगे जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं समाज में ख्याति प्राप्त होगी। 25 अगस्त से पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप योग, ध्यान एवं साधना अधिक करेंगे।

- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं एवं राहु के मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन सुबह स्नान के बाद सूर्य को जल दें।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।

वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि चतुर्थ भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु द्वादश भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं दशम भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

प्रथम तीन माह छोड़ दिए जाएं तो पूरा साल आपके लिए श्रेष्ठतम रहेगा। जो आप चाहते हैं उसे पाकर ही रहते हैं यही बात आपको सफलता के द्वार पर ला खड़ा कर सकती है। कठिन परिश्रम और बुद्धिमत्ता आपकी ताकत है और इस साल आपको अपनी ताकत का प्रयोग करने के कई अवसर मिलेंगे जिनके सफल परिणामों का आप आनंद भी लेंगे। मई के बाद आपको वेतन वृद्धि या पदोन्नति के रूप में आर्थिक लाभ भी होगा। जो व्यक्ति नौकरी में परिवर्तन चाहते हैं उनके लिए मई का महीना बहुत अच्छा रहेगा।

23 सितम्बर के बाद समय और भी बढ़िया हो रहा है। आपकी आय के मार्ग प्रशस्त होंगे। कार्य व्यवसाय में चौमुखी विकास होगा। कोई नया कार्य भी प्रारम्भ करेंगे उसमें आपको अत्यधिक लाभ प्राप्त होगा। वरिष्ठ लोगों या अधिकारियों का सहयोग मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रथम माह छोड़ दिया जाए तो पूरे साल आपकी आर्थिक स्थिति बेहतर रहेगी। आप कुछ बेहतरीन व्यावसायिक संबंध भी कायम करेंगे और लाभकारी निवेशकों के साथ भी निवेश करेंगे और इस निवेश से आपको बहुत अच्छा लाभ होगा। मई के बाद रत्न आभूषण, भूमि, वाहन, भवन इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है। आप कागजी कार्यवाही या फिर किसी वित्तीय लेन-देन की योजना भी बना सकते हैं। नई योजना बनाने के लिए यह समय बहुत उत्तम है।

23 सितम्बर के बाद समय और भी बढ़िया हो रहा है। यदि आप निष्ठा के साथ प्रयास करते हैं तो आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी रहेगी। धनागम के योग और प्रबल होंगे तथा आपको आय के नये साधन मिलेंगे। मातुल पक्ष के लोगों से आपको अच्छा लाभ होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में चतुर्थस्थ शनि के प्रभाव से आपका पारिवारिक वातावरण बहुत अच्छा नहीं रहेगा। आपकी माता का स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है। शनि ग्रह के गोचर के बाद घरेलू वातावरण के लिए समय काफी अच्छा हो रहा है। आप अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों को पूरी कुशलता से निभाएंगे। आपको भाईयों का अच्छा सहयोग मिलेगा।

23 सितम्बर के बाद सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि अविवाहित व्यक्तियों का विवाह करा सकती है। विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है। समाज में पद प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी।

संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। आपकी सन्तान की शिक्षा-दीक्षा में सुधार व पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से उन्नति भी होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। दूसरा बच्चा विवाह योग्य है, तो उसका विवाह भी हो सकता है।

शनि ग्रह के गोचर के बाद समय अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान का शनि गर्भवती स्त्रियों के लिए अच्छा नहीं है। संतान के साथ भावनात्मक लगाव में कमी आ सकती है। संतान के साथ वैचारिक मतभेद बना रहेगा।

स्वास्थ्य

प्रारम्भ के तीन माह छोड़ दिए जाएं तो आपका स्वास्थ्य काफी बेहतर होगा। आप सेहतमंद और सक्रिय रहेंगे। आप दृढ़ निश्चयी और सशक्त इच्छाशक्ति वाले व्यक्ति हैं जिसके कारण आप स्वस्थ रहेंगे। आपको कोई बड़ी स्वास्थ्य संबंधी परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा।

17 अप्रैल के बाद शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपके लिए समय कुछ तनावपूर्ण हो सकता है। अपनी चिंता और व्याकुलता विजय पाने के लिए आप ध्यान या योग का सहारा ले सकते हैं। 23 सितम्बर के बाद गुरु का गोचर ईर्ष्या, प्रतिशोध और विश्वासघात जैसी बुरी भावनाओं को खत्म कर आपके अन्दर सकारात्मकता प्रदान करेगा जिससे आपको शारीरिक आरोग्यता एवं मानसिक शान्ति प्राप्त होगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। शिक्षा के क्षेत्र में आप कुछ विशेष करेंगे सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप कोई व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही आय के लिए नये स्रोत का सृजन करेंगे।

शनि ग्रह के गोचर के बाद विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्ति के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा। व्यावसायिक व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में द्वादशस्थ राहु के प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होगी। आपकी छोटी-छोटी यात्राएं होती ही रहेंगी साथ ही सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी व्यावसायिक यात्रा भी होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा।

आपके सारी यात्राएं अचानक होंगी। इन सब यात्राओं से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए लाभप्रद रहेगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। पारिवारिक प्रतिकूलता के कारण धार्मिक कार्यों में आपका मन नहीं लगेगा जिससे आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। 17 अप्रैल के बाद आपके अंदर ईश्वर के प्रति विश्वास बढ़ेगा।

- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच या दुर्गा चालीसा का पाठ करें।
- काली वस्तु का दान करें या शनि मन्त्र का पाठ आपके लिए लाभप्रद रहेगा।



दशा विश्लेषण

महादशा :- शनि
(28/06/2016 - 29/06/2035)

महादशा शनि की अवधि उन्नीस वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 28/06/2016 को आरम्भ और 29/06/2035 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में शनि अष्टम भाव में स्थित है। यह स्वाभाव से एक अशुभ ग्रह है। यह बाधा-ग्रह के रूप में जाना जाता है और इसके कारण परिश्रम का फल प्राप्त होने में विलम्ब होता है हालाँकि यह फल से वंचित नहीं करता। यह जातक को लक्ष्य फल की प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम करने को प्रेरित कर उसके धैर्य की परीक्षा लेता है। आपकी जन्मकुण्डली में अष्टम, द्वितीय तथा पंचम भाव पर दृष्टि है और यह उनके कार्य को प्रभावित करता है। अष्टम भाव, जिसमें यह स्थित है, दीर्घायु, विरासत, पैतृक सम्पत्ति, दुर्भाग्य, दुःख, असन्तोष, पराजय, हानि, बाधा और चोरी का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

अष्टम भाव में स्थित शनि अष्टम भाव को बल प्रदान कर रहा है। दीर्घायु का कारक होने के कारण यह लम्बी आयु तथा प्रसन्नता देता है। विदेश में स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।

धन-सम्पत्ति :

अष्टम भाव में शनि की स्थिति के कारण आपके जमीन, बाहन, शक्ति तथा पद की प्राप्ति होगी। यह चल-अचल सम्पत्ति की वृद्धि में आपकी सहायता करेगा और अनेक उत्तरदायित्व का भार भी वहन करना होगा। आप अपने मार्ग में आनेवाली विभिन्न कठिनाइयों का दृढ़ता से सामना करते हुए अपने कर्तव्यों का पालन करेंगे।

व्यवसाय :

व्यवसाय में आप अपने पिता के पदचिह्नों पर चलने का प्रयास करेंगे। व्यावसायिक जीवन में अनेक गम्भीर समस्याएं आ सकती हैं। पैतृक सम्पत्ति तथा व्यापार में भी बाधाओं और समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है।

पारिवारिक जीवन :

व्यावसायिक तथा व्यापारिक जीवन की तरह ही आपका पारिवारिक जीवन भी दुर्भाग्य, बाधाओं तथा समस्याओं से घिरा है। आपको इन बाधाओं का सामना करना है। आप अपने घर से दूर ओर दूसरी जाति की औरतों की ओर आकृष्ट हो सकते हैं।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

व्यापारिक तथा पारिवारिक जीवन की तरह ही आपकी शिक्षा के क्षेत्र में भी बाधाएं आएंगी।

**अंतर्दशा :- शनि - शुक्र
(20/04/2023 - 19/06/2026)**

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 28/06/2016 को प्रारंभ होकर 29/06/2035 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 3 वर्ष 2 मास की होगी जो आपके लिए 20/04/2023 को प्रारंभ होकर 19/06/2026 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर-सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे-बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक उत्थान का परिचायक है। शुक्र शुभ ग्रह है। पंचम भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के एकादश भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप रोमांटिक होंगे। आपके बहुत से मित्र होंगे, लोकप्रियता बढ़ेगी। आपकी बुद्धि तीव्र होगी, धनी बनेंगे। प्रगतिपथ में बाधाएं आएंगी मगर आप उन्हें पार कर लेंगे। सरकार से पुरस्कार मिल सकता है।

शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र के तांत्रिक मंत्र के 36000 जाप करें।

**अंतर्दशा :- शनि - सूर्य
(19/06/2026 - 01/06/2027)**

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 28/06/2016 को प्रारंभ होकर 29/06/2035 को समाप्त होगी।

शनि महादशा में सूर्य की अंतर्दशा 11 मास 12 दिन की होती है। आपके लिए यह 19/06/2026 को प्रारंभ होकर 01/06/2027 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्री में चतुर्थ भाव में स्थित है। चतुर्थ भाव माता, स्वयं का मकान, घरेलू वातावरण, व्यक्तिगत संबंध, वाहन, बाग-बगीचे, पैतृक संपत्ति, शिक्षा, दूध, तालाब और झील आदि का प्रतिनिधि है।

चतुर्थ भाव में स्थित होकर सूर्य आपकी कुंडली के 10वें भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में घरेलू सुख में कमी आ सकती है। माता से संबंधों में कुछ व्यवधान उत्पन्न हो सकता है, जिससे चिंतित रहेंगे। दर्शनशास्त्र और अध्यात्म में रुचि हो सकती है।

अरिष्ट से बचाव के लिए सूर्य के वैदिक मंत्र के 7000 जाप करें। सूर्योदय के समय सूर्य नमस्कार करते हुए सूर्य को जल अर्पित करें।

**अंतर्दशा :- शनि - चन्द्र
(01/06/2027 - 31/12/2028)**

शनि महादशा में चंद्र की अंतर्दशा 1 वर्ष 7 मास की होगी। आपके लिए यह 28/06/2016 को प्रारंभ होकर 29/06/2035 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्री में प्रथम भाव में स्थित है। प्रथम भाव शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रूपरेखा आदि का परिचायक है। चंद्र शक्तिशाली ग्रह है। प्रथम भाव में स्थित होकर चन्द्रमा आपकी कुंडली के सप्तम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप घर और माता से घनिष्ठ रहेंगे। मन और माता का कारक चंद्रमा लग्न में स्थित होने के कारण आप अत्यधिक संवेदनशील और मूड़ी रहेंगे। इस कारण कार्यो में बाधाएं आ सकती हैं। कार्यो में देरी होगी, मगर पूरे अवश्य होंगे।

आपके मधुर व्यवहार के कारण जीवनसाथी और व्यापार में साझेदार का सहयोग मिलता रहेगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए चंद्रमा के वैदिक मंत्र के 11000 जाप करें।

**अंतर्दशा :- शनि - मंगल
(31/12/2028 - 08/02/2030)**

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है जो आपके लिए 28/06/2016 को प्रारंभ होकर 29/06/2035 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल की अंतर्दशा 1 वर्ष 1 मास की होगी जो आपके लिए 31/12/2028 को प्रारंभ होकर 08/02/2030 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्री में सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव आत्मीय संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन को खतरों का परिचायक है।

सप्तम भाव में स्थित होकर मंगल आपकी कुंडली के 10, 1, 2 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप विपरीत लिंग के व्यक्तियों की खुशामद करेंगे। क्रोधी और कटु वचन बोलने वाले हो सकते हैं। ईर्ष्या में वृद्धि हो सकती है। विवाहित जीवन में तनाव हो सकता है। आप मंगली हैं। आपके जीवन साथी भी मंगली हों तो अति उत्तम रहेगा।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें और हनुमान मंदिर में दर्शन करें।

**अंतर्दशा :- शनि - राहु
(08/02/2030 - 15/12/2032)**

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 28/06/2016 को प्रारंभ होकर 29/06/2035 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु की अंतर्दशा 2 वर्ष 10 मास की होगी जो आपके लिए 08/02/2030 को प्रारंभ होकर 15/12/2032 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में नवम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है। राहु छाया ग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती है। इसे अशुभ समझा जाता है पर यह स्थिति के अनुसार शुभ/अशुभ होता है। नवम भाव में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली के तृतीय भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप खूब धनी बनेंगे और प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे। इसके बावजूद अशिष्ट और पिता के लिए अकृतज्ञ हो सकते हैं। धर्म में आस्था भी घट सकती है। प्रत्येक कार्य में सावधानी आवश्यक है। कर्तव्यपालन लाभकारी होगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए प्रतिदिन राहु गायत्री मंत्र के 108 जाप करें।